কামিনী রজন।

の語り

তীযুক্ত দীতানাথ দত্ত বর্তৃক পরারাদি ছন্দে

বির্চিত হইয়!

কলিকাতা

अभिभूत्रकम भीरम्ब देठङक्षठरस्मात्रस यटस यक्षितः। जाहीबीरिकामा नर् ५ वामि।

' এই পুস্তক কলিকাডা শোভাবাজায় টেচনায় ২৪৬ নং দোকাতে ভক্ত ক্রিলে পাইবেন।

ফুচিপত্ত।

इक्ति वक्ता।	, '
জ্ভিপাল রাজার সভায় স্ব্যাসীর	া আগমন ও স-
🎨 মাসীর সঙ্গে রাজার ভারণ্যে	अर्थन, क कन
্রাপ্তার হঞ্জনের জন্ম, ও পাত্রপুর	জের সহিত মিলন ২
ब्रक्षत्वव अध्य काचिनो पर्नात, उ भ	ত্রপুজের নিকটে
পরিচয়; শারী শুক উপাখ্যান	ভ ব্যাধের নি-
🌣 কট হইতে রাজপুতের শারী খ	ক প্রাপ্ত ।
রঞ্জনের প্রতি শুক্পক্ষীর হিত উপর	मन, ७ अकरनरनम
তশবিরে কিশিনীর প্রতিমৃত্তি	দেখিয়া আক্ষেপ ১০
द्रकं मली ७क रमदनद (ठशांता नहेंसा	কাশীরাভার নি
কটে উপনীত,	· [>e
শ্রমীর নিকট হৈতে কেশিনীর দা	দীর ঘারায় তশ
वित्र ज्यानग्रन।	39
ওকসেনের প্রতিমূর্ত্ত দেখার। কেনি	नेनेत्रं चारकना २०
वितर वर्गमाः ६ त्रोक्षकन्तारक नरुष्ठत	ীগণের প্রবোধ। 🎉
मंद्रीत श्राप्ता वाश्यम, ও एकाम	নের নিকটে কে-্র্
ূ শৈশীর পরিচয়।	4 × 3 × 3
मही उक्त्मनरक मिन्छात कतिहा	পুনরায় কেশি
🌂 नींत (मर्स्स चांशमम,७ मञ्जीद ह	
সহিত সাক্ষাৎ এবং কেশিকী	७करनरनत्र न हे-
Signal winds ()	3.6

	**
रक्तिमीत त्रानीत निकल्ड शमन, अ एकत्मत्मत् व	
শ্না, এবং কেশিনীর শুক্সেনের সহিত বিবাহ।	২৮
अध्यस्य व नगाल ।	
	ತಿಕ
শারীকা উপাখ্যান ও হিমন্ত রাজার মূগরাতে গমন	(8)
হীরাশাল রাজার কন্যার সহিত সাক্ষাৎ এবং তা-	tą.
হার দেপ বর্ণাভহিনত রাজার দৈত্যক্ষাার	
শ্বেৰণে প্ৰন ও স্বভিক্তা এন দুৰ্মন।	્રશ્રી
हिम्छ ताकात है शिल शिकीत महानि शिक्ट मर्ल	1
रहेरा उचात अवर निक भारत माश्म पिया	į
्र भारकपिरशत भारता।	i, id
Free or Free Contract of the C	34
ইংগ্ৰপক্ষী হিমন্ত ভূপতিকে আশাস প্ৰদান এবং	·
शकी बाजाटक काश्वन गहरत जानप्रन ७ काश्वन ग	
হর বর্ণনা, ও নাজিনীর সহিত হিমন্ত রাজার	
श्रम्म ।	80
नाश्चिमीत वाष्ट्रीक हिमल ताकात खिकि, व हीत्रता	5° °
त्वत्र कन्मात श्रांत्र ज्ञान ज्ञान ।	, to
21 (14 (8 (14)) 14 (14) 14	88]
नाश्चिमीत देवजाकनाति निकाष्टे भगनः, वदः देवजा	
प्रवात मध्य नाखिनीत करथाशकथन।	84
নাখিনী হিম্ভ রাজাকে নমিভ্যার করিয়া রাজসূতা	. 1
त्र करान थाराम्।	•
American Company of the Company of t	86
अभा अभा तानक म्हरण म्हमल तानात विमात अभा अभा अभा ता जिल्लाम	•
र्वा असात्र याज व्यवस्थ	4.5
श्रिमख तालाटक रेमजा नूजात नटक कांगेल सिंच-	•
े श्री ४७ कात्रश्र चाटन।	C 3
रेमछा ताबात नहा वर्गन, धवः क्विंगित्वत वाद्या हि-	١.
मञ्जाकात मछक (इसम कतिवात कारमण अ	1
পাত মিত্র কথা অনুসারে কারাগারে বন্ধন	
अहर कृत्य ग्रामन क्या कर्याद्य काश्वा रह वस्त्र	

হিনন্ত রক্ষার সহিত বৈত্যকন্যার বিবাহ ও
হন্তেরকার সহিত বৈত্যকন্যার বিবাহ ও
হন্তেশ গমন।
কালিকার ইতিহাস সমাপ্ত।
কাজন ও পাত্রের শুক শারী লইরা কর্ণাটে গমন
এবং শুক পক্ষীর দারা কামিনীর পরিচর প্রাপ্ত ক
ক.পক্ষী পুনরায় কামিনীর নিকট গিরা রজনের
হানে মুয়য়র বার্তা আনে।
মুয়োহন রাজার ভবনে ভুপতিগণের আগমন
ক এবং কামিনী রঞ্জনকে মাল্য প্রদান ও রঞ্জনের
পরিচর প্রাপ্তে রাজা নন্তোয
কামিনীর সহিত রঞ্জনের বিবাহ ও হুয়ন্ত নগরে

ইতিহাস ন্যাপ্ত।

আগমন।

কামিনী রঞ্জন

নিরাকার বন্দন।।

नत्या निका निवक्षन, निर्किकात गगांचन, मंत्रभित्र मस्रो ্কর দীনে। অনাথ জনের বন্ধু, পার কর ভবসিদ্ধু, জ্ঞানি ्रेंशीन रुक्त विरोतन।। नर्ख कोरव खाविर्जाव, नक**लाएं** ুদমভাব, জ্ঞানধাতা প্রভু দিরাকার। দুজন **পালন লর**; কটাক্ষেতে সৰ হয়, তব গুণ ব্যাপ্ত চরাচর।। তুমি অজ্ঞা-নের জ্ঞান, সাধকের রাখ মান, সিদ্ধিদাতা পাপ বিনা-भन। তব তত্ত্ব জানে বেই, त्रकाएए भूषिक त्रहें, कींग्रे अक অধম তারণ।। ভুমি দর্ক মূলাধার, দর্কত্তে আছ দঞ্চার, जिमित्र मार्थक क्रशामत। धन यम चंदर्शाहत, त्वन्तर्य ভুমি সার, সেই ধনা যে ভোমাতে রর।। কে যুঝিতে ভাষ मर्भ, कृमि अकू धर्माधर्म, या वना ७ छ। है जामि विना क्रमंगी कठेत्रांनत्न, जूमि छोत्र तका देवतन, भातावर्ण कूर्य निनाम नकति।। कि स्वाम्बर्ग उत नीना, सकूरत वीक सर्-ক্রিলা, কলে ফল তব ক্রপাভৃষ্টি। স্থাবর জ্লাসে থাকে, পালন করহ তাকে, ইচ্ছায় করেছ এই সৃষ্টি॥ তুকর্ম 🚁 কর্ম সব, ভোমা হইতে উভব, যারে লওয়ার যেমন প্রকার র। নিষ্ঠাময় ভূমি সার, আর সকলি অসার, মুক্ত কর 🕸 जेव गरमात । गौजानाथ एउ कन्न, श्रीशामशरबंट मन्ने, हत अपू कॉलमोत अर्टन । उँल कल यम शाम, किছু मौत्र[े] मीरिक्नान, ब्रंबरी क्षेत्र ह्या ते ख्यारने ।

গ্ৰন্থ সহন।।

পরার।্তুশের নগরে আছে রাজা তন্ত্রিপাল। শান্ত मास् अनुवस विक्षा विभाव।। जात्म जांका कर्न नम अ-তাপে বারণ ্রিক পতি তুলা জানে মানে চ্রোধনণ। সভাবাদী কিটিটিয়ে তেজেতে তপন। থর্মেতে ধার্মিক অতি রসিক সুজন।। শিষ্টের পালন করে ছুটের দমন। ৰাগ বজ্ঞ অহৰিশি অভিথি সেৱন।। স্বাগরা পৃথিবী শাসিল নুপ্রর। ব্যগ্র হয়ে রাজাগণে দিল ভাঁরে কর।। এক রাণী বহু রাজ্য সদা হৃষ্ট মন। জ্ঞাতি বন্ধু কুটুয়েতে विष्ठि बाक्तन।। धर्मनाम नाटन मञ्जी खाकि विष्ठका। नाना छन जारन रम्हे नियाह जूदन ॥ रेमवरवारन नृथ-ভির ৰহিল নক্ষা চিস্তায় চিন্তিত বড় ১ইল রাজন।। রাজ্যের যতেক প্রজা হইয়া কাতর। ঈশবের কাছে ভারা भारत अहे वह ।। कुशा कह छन्मिधि रहेश प्रमा : हाकार জনয় বিনে রাজ্য নষ্ট হয়। হায় এতু চোমার কেনন বিখেচনা। নাহল রাজার পুঞা একি বিভ্রমা।। পুজের কারণ রাজা ক্লঃখিত অস্তর। যাগ হোম দৈবকর্ম করিল বিস্তর।। তবু না হইল পুজ ভাবিত রাজন। নিরানন্দ মনে নৃপ করেন যাপন।। রাজা রাণী গুই জনে হইয়া কাভর।, এক চিত্তে পুজা করে মৃতিকা শক্ষর।। পূজা করি ছুই জনে করে স্তার স্কৃতি। মনের মানস পুর্ণ কর পশুপ্তি॥ দীন হীনে দয়া কর প্রভু ক্রন্তিবাস। চরণেতে রেখ গ্রভু না কর देनत्राम्।। ज्यादम कदम धहैकाला शिल वृद्ध हिन। भारतेत ना হর সুস্থ সভত মলিন।। এক দিন নরপতি সভার বসিয়া রাক্যত্ব করেন নৃপ পাত্র মিত্র লইরা।। চতুর্দিলে ত্রাহ্মণ পণ্ডিত আছে বসি। धरनकात्म धकु जन आहेम, मुझानी मीर्घकाँछ। निरत कर्ण सर्वात कर्णन। उस माथा करनवत्

आत्मनाहिबाने । निक्कांनी किथिता तालां श्रेशां कांने आनि दिनिबाद किला। छादि भन भन ताला हरें ता कांने जानि दिनिबाद किला। छादि भन भन ताला हरें ता कांने ताला निवास अर्थ हरें ता निकारित । किला कि विविध अर्काद ॥ त्यांत्र मुख्ये हरें ता कि किश्वत । किहिह्म ताला अर्थ नित्र कांने कहा । विद्यातित्र । कहा किला भित्र । किला भित्र । केला कांने विद्याति । विद्याति । विद्याति । वृभवत त्यांति । वित्र । विद्याति । वृभवत त्यांति । किला नित्र । मिला भित्र । मिला भित्र । मिला भित्र । मिला भित्र । मिला भन । विद्याति । विद्याति । किला किला किला किला वित्र । विद्याति । विद्यात

লখু-বিপদী। সন্নানীর নতেস, তথ্য ননোরকে, নিবিজ গছন বনে। নানা জাতি রক্ষ, কভ গশু পক্ষ, ছেরিয়া
শক্তোধ মনে। ভ্রমরী ভ্রমর, উড়ে নিরস্তর, গুনং ধারি
করে। পিকগণ ডাকে, বির্ছী চমকে, ধৈরজ ধরিছে
নারে। সুশীতল জল,তাংহ শতদুণ, করিয়াছে বন শোভা
গন্ধ প্রকুটিত, অতি সুললিভ, অলিগণ তাহে লোভা।।
রবির কিরণ, নাহি দরশন, পল্লবে বেফিড আছে। দেবগগুছান ধীর সমীরণ, মন্দ মান বহিতেছে।। বিহ্নম সব,
করে কলরব, শুনিভে সুন্দর অতি। বক্রগণ চরে, সনা বক্রটিরে, হইনা আনন্দ মতি।। পক্ষী টুনকুচি, করে কিটিমিচি, ভাছক ভাছকী ভাকে। মরুরী মরুরে, সদা নৃত্যা
করে, ভ্রমিলি তথা থাকে।। ঝাকাত চন্দনা, শানকী
করেনা, পান্তেনিভি কাদাধোঁটা। মুরি টিয়া কভ, খাকে

ষ্মবিরত, আর নানা জাতি পেঁচা।। হাড্থেলা চীল, করে क्रिजर भोकता नत्रहास छाता। रूप्त हर्श्नी मूर्य, सरमत्र কৌভুকে, বারি মধ্যেতে খেলার।। কাটঠুকরিয়া, পক্ষী ছাভারিয়া, চাভক চাভকী নঙ্গে। বাদভিয়া কিলা, চরে मांहद्वाका, मनभीशी मत्नाद्राक्ष । नादम हत्कात, त्र-थिएक सुन्तव, हिन्धूनि वत्राय भाशी। मरहल तुल्युनि, नमा করে বুলি, হইয়া মনেতে নুখা।। ফুক্সণ আর, বিবিধ প্রকার, আছে দেই রুমান্ত্র। গুরাক কাঁঠাল, আমু য়াম তাল, কঃম্চা ভেঁতুল শাল।। দাড়িয় খাজুর, ক-দলি প্রচুর, আতা নোনা আহলকি। বাদাদ মাদার, श्राकादत श्राकात, कानजार इतीलकी।। व्रेक्टि अवधि, পড়ালি ভুরেন্ডি, পিয়াতি শিঞ্জা গান্তারি। আমড়াব-হেড়া; পর্নাস সেহভা, ভাছে তথা সার মারি।। কা कल कत्रन्ति, हायून्या गहिन्दि, श्रीत्रक निष्य निषिन्ता। शनाम दर्मात, दिवादक माति, दिखेली वैवाकसूरमा । , आकल मिविय, नाहि तिमिलिम, निगृल लिखता नाहै।। অথথ পীনাশ, বেল আনারস, ধুনীচা কুরুরছিটা।। ছাতিম চালিতা, পুরাগ শিলিতা, কুরকুচি বুচইলতা। ্থাদিরলবজ, আরু কামরজ, শতমূলী তরুলত।।। বনের নৌন্দর্য্য, হেরিয়া আশ্চর্য্য, হইলেন নৃপবর। মাইতেং, भारता माधारण, मार्थ अक महारावत ॥ जाहात निकरि নানা পুত্প ফুটে, রসায় ঋষির মন। বিরহিণীগৰ, হয় ्ष्य हिन्द्रम, यमि करत्र मत्रभन्।। (शालांश हेशत्र, कुन्नु मार्शः खत, शाक्षण (क ककी क्षां कि। याहतमनिका, त्वण त्म-্কালিক', চৃম্পাকে করিছে জ্যোতি॥ করবী করালী। अक्र गारमणि, तक्र मीभका रक्ष । याथवी सम्ब क्रमण् विक्रत्र, रहतिका आने आकृत ॥ ऋत्याक किः अक, शक

রাজ বক, অতসী অপরাজিত।। সূর্য্যরথী কাঁটা, অভি পরিপাটি, রুফকলি রাধালজা।। তাক্স ধুভুরা, কিবা श्रांनाहता, त्यां विष्ट् शामा साथाछि। स्रवा नीवंशक, স্থার খেতপথ, ভলপথে খোডে মাটা।। ছই জনে পিয়া তথার বসিয়া, পথশ্রান্ত হৈল শেষ। ক্ষণকাল বসি। बनिन मनामी, अयोरन थाक नरतम्।। তোমाর कांत्रन, कति शर्यापेन, कल जानि पिर आमि। तानी शाहित कन, रूप कर्नाकन, वः मध्य शास्त जुमि ॥ मञ्जामी वहन, खिनिया ब्रांकन, त्महेचात्म चित्र त्रह । नृशिक्ति वर्तन, रभन करन हरता, कांत्र वाका मिथा। मरह ॥ कन करने कति, नृश रतायति, जाहेत्वन मिश्चत । धतं धत कतः, विनास कि कन, शृष्टाक याह मचत ॥ तानीत अ कन, मिर्ट गरावन, अङ्ग्रे रहेटन शत्। जिन मिन (भर्तन, चक्रन क्रिंग, हेर्य हरन धांक्रकात ॥ क्ल क्रब्र स्वा, অন্তর্জান হৈয়া, সন্নাদী চলিয়া গেল। তাহারে না দেশি त्रामा मत्नाष्ट्रची, अस्तत्त्र नाकूत रुन।। राग्न र्हाप्त कि कतिलाम, गर्क पिश मछाইलाम, मामाना कलाएक করি আশা। বছ রত্ন পরিহরি, কাঁচেতে ষ্ঠন করি। মিছাখিছি অনিতা ভরষা।। যদি চতুর্বর্গ চাই, আনী ब्रारम छाहे পाहे, भूख च्यात्य मन शब पूत्र। मिक स्वहे **मिश्र**यत, व्यासाद्य मिट्डन तत्र, एवा कृति अक्षामी ठाउँद किছू ना त्रिथि छेशांत, मध इरेग्रा विखात, प्रकारमध्ये व्याहरनन परता तांगी शहन अजूमजी, खनि बाका स्क्री चिंह, भिर्दे कन मिन जोत करते।। द्वानीस करहे जूनानिह भोख कति था ध कन,है (वं इहै दिक ७ छक्त । उस्ति धाहेन त्रांनी, कटन कन हरद खानि, त्रहे कटन भाहेरवन कनता গর্ভবিকী হল রাগী, লোকে করে কাথাকানি, পুনুক্তে

😔 শয়ার া দেখিয়া পুজের মুখ চিন্তিত রাজন। বলে , चांचि इन क्ला ना एक विकास ।। सूत्रं किनिया वर्ष कि **पित जूनना। ध्वांज्ल हेशंत मद्य ना २३ जूनना।। जा-**रनामिक श्रेषा ताला विरक्त मित्र मान। यरकक बाक्रम গণে করেন কল্যাণ।। প্রজাগণ হইল সবে আনন্দ অপার সুখের সাগরে ভারা ভাসে অনিবার।। দিনেই বাভে मिसं (यन हस्कना। इत मार्गत यथन इहेल तांक-বালা। সমপ্রপাসন তাঃ দিলেন তখন। ব্রাহ্মণ কুট্র **শণে করাইল ভোজন।। আচা**যা আনিয়া রাশি ক্রিজ গণন। গণন করিয়া নাম রাখিল রঞ্জন।। পঞ্স ৰুখনর মূহৰ বয়ঞ্জেল হইল। পণ্ডিল আনিয়া,বিদ্যা শিখা हैरछ दिया। लिक्करकत कार्छः छारत किन मनार्शन। এक শ্বন্ধে নানাশান্ত কৈল অধ্যয়ন।। অল্প দিনে বস্তু সাত্তে र्देश शिका अब भिका धर्मिका बाकात य नीक ॥ बिकार मृशमा क्रिएक यात्र वरन । वक्र कृतम चरत्रक বিভিন্ন আনে।। প্রাক্রম দেখি তার সবে চমৎকার। खब्दमः मरखामः इहेन, गळ शाहेल छत्।। (मर्थित्रा पुरक्रकः अक् तांनी श्रक्तेमन । गृह्यक निकटि वाटच कवित्रा मञ्जूत ॥ -ক্ষিত্র আন না কে খিলে: রহিতে: না পারে। সর্ক ভ্রাথ পার स्वित्र रहित्रा क्यार्ज । ७३ ने क्वित्र क्रिक्

यात्री भारत भावाभूख मरक रहेना अन्त्रता प्रहेकरन क्रक हैं है भारत (जाकता) यरनत जानत्त करत नगर जयन 🕸 ঞানের যভেক লোক ঘোষে তার যশ। রঞ্জনের গুণেতে স্ক্রলৈ হৈল বশা। বিবাহের যোগ্য পুজে বেখি নুপ্ররান वानीत निकारे निया कहिए गचत ॥ अनह अपनी अन আমার বচন। রঞ্জনের বিভা দিতে করেছি মন্ম।। त्रांगी करह हेहा हहेए**छ कि ज्यारह जास्ताह।** शुख्यत्र विवाह फिट्छ कांत्र माहि गांधा। शत्रम ऋफती कन्। छ-क्षांन कतिया। जात नक्ष्म तक्ष्मतत त्रिष्ठ ज्या विद्या।। घडेक आर्टा । जाका नाना छात्म छान । मत्नात्यान कृति करत कमात्र नकाम। आस्तामिक मरम त्राका वाहिएत ष्याहेल। किकत शांटारत घडेक ष्यानाहेल।। नुश्रतत कि ছেন ঘটকের প্রতি। কন্যা অন্বেবণ হেতু যাও শীম্র-शिक्ति ।। तक्करमत विद्या पित नाहिक मत्लहा भातम मू-महती कना। मस्तान कतर।। अनियः, घटेक उत्य रहेव विमाध । वर्षा ज्या क्नात मकारनरक विष्या सि স্থানে পাত্রের কুমার বসিছিল। আসিয়া রঞ্জন কছে সর নিবেদিল।। শুনিয়া এসব কথা রাজার কুলার: বিষয়। বদনে তবে করিল উত্তর ।। এই কথা কহ গিয়া পিতার महत्र। अथन विवाह भारत नाहि अरहाकन ॥ शांक श्रेक পিরা তবে রাজস্মিধান। রাজার নিকটে লব **করে** निरम्बन। त्रक्षानत् कथा क्षनः त्राका महानग्र। असम বিছা করিতে তার মত নয়।। রাজা বলে বল দেখি কি সের কারণ। বিবাহেতে অসমত হইল রঞ্জা পাতের: नक्स दरन जामि नाहि जानि। छाहादा जानिया विका সহ ৰূপৰ্বি।। পূজ আনাইয়া ব্ৰাজা কাছে ব্যাইল্ড बक्रानब अछि नुश बिखागा करिन ॥ कर्श्व विवास

कति छोशंत कांतरं।। शां अंश्व यहंग मधा खित कत्र मंछ। अवना मिनाव आनि मिने खनव है।। सन्तर म-कन क्ष्यं केत महत्व। छेडला श्रेटल कर्म ना श्रंत मा-धन।। छुटे करन हल याहे कला। अस्विष्छ। मूर्याण मश्रमा अम कित विधियरछ।। मिहारह आनात यि आति स्वाध याहे। कर्नार्छ याहेला श्रंत छेशांत। महा भांत स्वाध याहे। कर्नार्छ याहेला श्रंत छेशांत। महा निक्षम कित द्राक आनित। मोनिक नहेंत मर्लि कितिहा। छुन। छा। छह मानत स्थम हर्त मश्यो । अहे क्षा महान। कृत कित हर अस्वाध केत्र हर कर। द्राक अमिनेश कांत्र कांत्र खानित। क्षा केत्र हर कर। द्राक अमिनेश कांत्र कांत्र खाने। क्षा केत्र हर कर। द्राक अमिनेश कांत्र कांत्र कांत्र खाने।

जिल्ही। यीनरकजू नारम बाध, लग्ना माजनाला काँम, व्यवलाएं कविया भवन। कति कवि कीक भव, জামে ব্যাথ নিরন্তর, নানা জাতি পক্ষীর কারণ।। নিত্য ীরিহঙ্গম ধরে, বহু প্রাণি হত্যা করে, দুরা পুত্রে করিতে श्रीनन। शिया शास्त्रत जलात्म, এक मिन रेम्द्रामध्य, না মিলন পশু পক্ষী গণ।। মনেতে অতি কাতর, ছংখ खाँदि निवस्त , जामा किছू ना प्रिच छैशाय । माता शूख 💌 বিবার, সুধার হল কাতর, আহার বিহনে প্রাণ যায়।। व्यक्ति इहेन थाए। जिमाजि वान, विमानक विदेशक छट्टा विविध मञ श्राकारत, जाभनारत निन्दा करत, बिक प्रःथ जामांत्र क्लात्न ॥ (मरे शृत्कत जेलत, मांत्री ুষ্ঠিক নিরন্তর, পরম সুথেতে করে বাস। ব্যাথের গুনিয়া क्था, बर्निट शहिन राश, भाती रात नर्सनाभ । क-ঁছিছে শুকেরে শারী, ব্যাধ নিত্য পক্ষী মারি, পরিবারে केत्रस्य भीवन । शश्च भक्ती ना भारता, जलस्य काञ्च र्इक्रा, चार्यनाद्य कतिहरू निक्रन ॥ एक वटन भागी खुँगई ্ৰাই ব্যাধ অভাজন, নিভ্য করে প্রাণিবর পাপ ি নাহি

काबिनी इंबन

करत धर्माङ्य, निर्मन्न निर्भुत कांत्र, भाकि शाहेग्राहि ममञ्जाभा। অভিথি হয়েছে আসি, রহিবেক উপবাসী, क्रियानार्ड श्रव म ब्रिटिश । क्रिय चित्रि (मरान, श्रव शुन् फेशार्ब्जन,शतकान निष्ठात इहेरव ! एक करह गांध श्रक्ति তুমি অতি মৃচ্মৃতি, পাপকর্মে নাছি কর ভয়।। নি-ভঁরেতে প্রাণিক, নাহি মান উপরোধ, তব সম পাপী কেহ নয়।। করিলে অধিক পাপ, মনে পাবে পরিতাপ, পরকালে ন। পাবে নিস্তার। অনিত্য বিষয় বিষে, বঙ্ক हत योग्राकारमः जीवि प्रथ कह सरह कात्र ॥ जायात वर्ग धत्र, शश्च शकी नाहि योग, जामाविध कुः अ उत শেষ। চল আমা (माहि लास्त्र, ताआत निकां केट्स, का-মারে হে করিব ধনেশ।। পাক্ষীর বচন শুনি, আধ স্বি-স্মর গণি, পক্ষী এতি কহিতে লাগিল। তোমার কি खन जाटक, वलह जामात काटक, धरन भारत जुविदन जूशान ।। वाद्यत जात्र शे अनि, खिक जादत वानी, मिथा। नरह आयात उहन। यहि आणि मरन कति, छन-নাসে বলিতে পারি, ভূত ভবিষ্যৎ বর্ত্তমান।। এত বলি শুক শারী, গেল তার বরাবরি, ধরা দিল আপন ইচ্ছায় উভয়েরে হাতে করি, চলে ব্যাধ দ্বরাত্রি, ধরাপতি चाहरत यथात्र।। (इथात त्राञ्चनकान, चाक्कां) (इचि স্থান, মন মধ্যে গণিয়া ছতাশ। রাজার বাটার কাছে; উত্তৰ উদ্যান আছে। যদ্দ যদ বহিছে বাতায়।। চঞ্চল रहेश बरन, यात्र त्मरे तथा वरन, विकाद र रहेश कां-जत्र। त्मह तमनीत जार, श्वरता त्मरमा जार, जारन नहा महि जावासत।। वाधि भाती एक वास, हाल: चिक क्रिक राम, श्रे मान ताका मिश्रामा वक्षन ए शिक्षा भाषी, न्याध्यतं कहित्ह छाकि, बान शक्तीश्रं

काकिन प्रवाद

बाम क्रिम ॥ त्राम्य करह जारते, देशका भाईरेल शकी स्रोत, गठा कति वंगर धामीय। वेमने संस्त्र भागी, जि चूंबरम नाहि प्तिथा, मूला मेरेंग्न किर ए प्रतीय ।। वार्ष कर्ट विकादिया, कामना माथाएक भिया, काम भारत भारती नांदि व्यथि। मात्री शृंक शतिवात, क्यान देहन की जत, मिरे प्रत्य इहनाम छ्रथी।। পण शकी किनिएछ, वर्ष ইকের তলাতে, অমবশে বদিয়া তথার।। দেই রক্ষের खेशात, हिल प्रदे थशनत, महा देकल एएथिता आभाता। क्टिलक एक भारी, भाषात्त उर्गना कति, जुनि नेष् एक शीशामता धर्मश्रदथ नाहि नन, शक्तिवस अञ्चलन, शतकात्व कि इत्त छेशात्र ॥ शतु शकी नाहि वश्व छनत्त्र चदिवि वाधि, लास हुन विकास नम्म। याहेरल बिक्सित वाम, निकि करव मनका म. सम वाटका शाद नामा धन ॥ नियान वहन छनि, त्रक्षन कहिएए वांगी, विक्रा कत्रह शिक्ती त्यादित । मित्रा वद्यद्वज्ञ थन, जूचिव क्यादित सन, हैर्ष कृत्य मा जार व्यस्तत्त्व । एक जरव (इनकारण, तक्षम निकटि वतन, नक मूछ। वाद्य त्वर मान। श्रीकांत कः রছি আনি; অন্যথানাকর তুমি, ধন দিয়ারাখ মুদ্ माना। लिक्द श्राम रहन, निविधाः एतः यंन, शंशवतः करेत्र वर्षायन। कर भक्ती (मात्र काट्ट, जामात्र कि एन कारक, बारिश्वत विकित विकास ।। एक बर्टन महाभागे, নিবেদি তোমার পার, ভূত ভবিষ্যং আমি আমি। बाहा जिल्लानित जूनि, नकन देनित चार्मि, नक बंगी ब्रोटिश रमर चानि।। विचा श रुरश चल्लरत, नक्ने बेखी मिश्री कारतः भको नेत्रा कतिन शंगन। मेकिनाय एक करने क्रम्ह ग्रम मामान काली भागभाष त्रामि मन्।।

श्रमात्र । तक्षन शाहेता शकी रुतिय अस्टरत । ताबिहा यक्रम कति मूनर्ग शिक्षद्र ॥ नामा भाज जिल्लामा कर्द्र ব্দ্ধ স্থানে। পরম পণ্ডিত শুক কহে ততক্ষণে।। 💖 মুখে ইতিহাস করেন প্রবণ। গুনিয়া সম্ভট হয় রাজার নুষ্দন।। প্রাণ হইতে অধিক পক্ষিরে ভালবাদে। যুখন করমে যাহা শুকেরে জিজ্ঞানে।। এক দিন রঞ্জন পাকির্ প্রতি বলে। আমার মানস পূর্ণ হবে কত কালে।। গণিয়া ইহার ভুমি করহ নির্বর। বিভারিয়া দব কর্থা বলহ আর্ भाग्न ॥ करणक काल भरवाद् क्रित्रा भगन । त्रक्षन मि-करि शक्की करत निर्देशन ।। स्वर्थरमः कन्। वक कहि मन्नमन । त्महे व्यवि विक्रिलिख कहेल खर भन ॥ खर कारहे দে ধনী পরিচয় দিয়াছে। সেই সুবদনী রামা কর্ণাটেতে 🕏 আছে।। মনোমোহন সুতা তার নাম কামিনী। তক্ঞ **चारण मित भूजा क**रत रमष्टे स्ती ।। रनशास्त या**टेरव छात**्री সময়ন্তর হলে। সেই ধনী বরমাল্য দি:ব তব গলে ॥ তোখা 🥳 ब भानन এই হর कि न। হর। সতা করি আমারে বলহ মহাশর।। শুনিরা শুকের বাকা রঞ্জন তথন। সবিশার্ মানি মনে বলয়ে বচন। সত্য বটে তব কথা কিছু মিধ্যা मग्ना (म त्रमणी अहे वाणी मिल श्रातिष्ठ ॥ कड मिल मिल्रम् ছইবে ভার সনে। মম মন ভির নর সেই নারী বিনে 🕍 পাৰে কি না পাব তারে কহ স্বিশেষ। সে ৰূপ দৃশ্যে रेश्न मच थान त्यव।। भिना निर्मित्ति तारे क्य कर्रास्ट्री জাংগ। রক্ষণণ শুক হয় যেমন নিরাগে।। বারি ছড়ি शहरल मीन वांटा कल का। मिन हाता केनी हरस द्व-**व्यदि कोर**न।। दिन। निम्नि नाहि क्रान (हतिया जोहांक'। का निरम भारे इस मिनिया भागाय।। एक वर्ण सम

को अने बर्गाना कि ह निर्नास्त सादा भारत कि क्रिके देश्रीत्रम्बू रियो जन कत्रह नेसन। बदनाइ:व अहि बिदित कर मन। जामि अक रेडिराम करिय छिद विकास किमिनीरत व्यक्ष राम इत। शाहिना हिर्देश थक हिल मृंभवत्र। मर्सछा थनी रंगरे विद्याहि হিশার।। এজার পালন করে পুরের সমান। বিচার क्रिया निज् राय गावधान ॥ अकाशण मत्व स्वी नाहि লাপাচার। প্রতি ঘরে নৃত্য গীত হয় আমিবার।। সম रेव्रटंफ रुव क्ल व्यन्तानि श्राप्त । त्विरल द्वारकात त्वीकी ভীশ যায় ছুর।। পরম সুথেতে রাজ্য করেন রাজন अकरमन नार्य छोत कनिष्ठे नन्तन।। मकन मस्राम इंटेर्ड भ्रांन बारम ভाরে। রাজা হইল কালপ্রাপ্ত কিছু দিনা-स्टात ।। भन्न नभरत्र करव मिहे नृभवत । कनिष्ठे भूर्रे दिव উবে ডাকিল সম্বর। মনোহর বাক্স এক ছিল তার স্থান भिष्ठे राक्त **एकरमरन क**िंदरनन मान ॥ किছू मिन जिन জ্রীতা একত্রতে ছিল। দ্বন্দ্ করি পরস্পার সূতস্তর হৈল।। 💆 ক্ষেত্র সেই বাক্স খুলিয়া তথন। উত্তম তসবির এক কৈল দর্শন।। কেশিনীর প্রতিমূর্ত্তি আহয়ে তাহায়। হে শ্বিয়া তাহার মন স্থির নাহি হয়। কেমনে পাইব কর্না ভাৰে অহনিশি। দেহে নাহি থাকে প্ৰাণ বিনে নে 🔏 প্ৰী। তার ভাব ভেবে সদা ক্ষীণ হল অতি। বিরহ विनल भार कर्त्र पिया त्राणि॥ किंद्रूल निर्देश नार्दिः হয় সে আঞ্ৰণ। বারিতে না যায় জাল। বাড়য়ে ভিন্তৰ গ क्रियन मागरत जारन नाहि भात कूल। वाट करके लहे विष्मी विरम कुन।। श्रांचन गडी जरू विमे छान्। नीरह । जोशा चल विवतन छाशाँक कशिक्ष । स्वेन राष्ट्र महिनद्व भाषाद्व रहत । जाण्डरी विश्व वक सहिन

ৰ্শন্ধ। কেশিনীর প্রতি মুর্তি আচ্চের তাহার। জন্ম ক্রান্তের বুপ নাধিক প্রায়।। জর্ম হল প্রাণ না হেরে ভারারে। প্রবোধ বচনে মন থৈয়া নাহি ধরে।। উপার্থ করহ শীঘ্র বিলম্ব না সর। না হল তাহার সক্ষ কিরে প্রাণ রয়।। মত্রিবর বলে তারে আখাস করিয়া। সেই সেশে যাব আমি তসবির লইয়া॥ তোমার চেহারা এক করি চিত্রপটে। লয়ে যাব সেই দেশে তাহার নিকটেন। মন্ত্রণার বলে তারে মিলাব নিশ্চয়। কি আছে সম্প্রত ইথে করিব উপার।। রাজপুজের চেহারা করিয়া লিখন স্বেরা অরণ। রচিল প্রীতানাথ কামিনীরঞ্জন।

वयुजिभन्ने। विषश वन्ता, यात्र (गरे श्वादन, विषादन किमिनी चाट्ट। हाफि नाना तम्म, श्रिन चवर्मय, का শীর রাজার কাছে।। সে রাজকুমারী, কেশিনী সুদ্রী नाहि रुप्र नम्रश्वतः योजन नगतः, शहेल छेमतः, छहिन খিনী নিরম্ভর।। মুদ্রিবর গিয়া, প্রণাম করিয়া, দাভাইক করপুটে। দেখিয়া রাজন, করি সভাষণ; বসিতে করে निकरि।। नृপरत तरल, चिक कुक्ररल, तनिक कर हि थाय। किंदा नाम ध्रद्र, कान कार्या कर्त्र, दिरामस म्बामाग्न । (इश जानमन, इहेन कि कातन, मरनटक मि স্থাশা করি। বলহ আমায়, করিব উপায়, হুত ব मारा भावि।। यत्न महिवत, अत् नत्त्वत, भागाव त চন শুন। পাটনাতে বাস, নিত্য করি বাস, চিত্র করিছা नियुग।। जाना कर्य नाहे, के बावगाहे, विवा निर्मि किक ক্রিবি। করি পর্যাটন, কার্য্যের কার্ণ, ভাল ঠাই প্রা ब्रिंग बाकि ।। श्रेनिया बायन, कहिए ज्यन, लम बाह इसका । यति गय मणि, जामात रगिक, धाक पु

ক্ষিরন্তর।। চিত্রকাবা যত, কর অবগত, তাহাতে মা-निक शादि। जायाद महन, थाक नर्कक्रव, बानन नक्रव कर्रेट ॥ 'त्राक्षात वहन, श्रुनिय़। ज्रथन, मञ्जी अविनद्य वहन ভিটামার আজায়, রহিব হেথায়, যদি অনুগ্রহ কৈলে।। **জাঁকি** হতাগণ, বলেন রাজন, দেহ বাসা **চি**ত্র**করে**। 👺 শ্যান আমার, অতি চমংকার, রাধ লইরা তথাকারে রিজার বচনে, যভ দাসগণে, সঙ্গে করি লইয়া যায়। ভিদ্যান ভিতরে, অট্টালিকাপরে, সেই হানে মন্ত্রী রয় ॥ চেছারা লিখন, করে অনুক্ষণ, আশ্চর্যা দেখায়ে যাছা। বাজার ভ্যব, পিরা ওতক্ষণ, রাজারে দেখায় তাহা ম क्छ হয়ে অভি, সেই নরপতি, পুরস্কার করে ভারে। ैमामा রড় ধন, রজত কাঞ্চন; পায় রাজার গোচরে।। 'উদ্যান ভিতর, থাকে মন্তিবর: চিন্তার চিন্তিত মন। উष्मादनत कारह, अहे। निका चारह, ताइ किमानी खरन । রাজার ছাহতা, হয়ে হর্ষিতা, স্থীগণ প্রতি কন। **इ**ल जेमारनटङ, याहे त्युष्टिख, इहेब्राह्य सम सन ॥ গুলি স্থীগণ, চলে ভতক্ষণ, মনে হরে হর্ষিত। গিরা भिष्ठे दरन, खाम साना श्वास्त्र, मार्था भारेता औछ ॥ স্মায় সরোবরে জলক্রীড়া করে, বস্ত্র রাখি কিনারায়। ক্ষতি সঙ্গোপন, দেই রম্য বন, দেখানে কেহ আ যায়।। সকলে মিলিয়া, কুলেতে উঠিয়া, নিজ নিজ বন্ধ পরে। কেশিনী সুদ্দরী, দকে দহচরী, ভ্রমিছে বন ভিতরে।। अक्षियाणि इंटेटि, मञ्जी त्मरे भाष्य. हाल जाभनात स्ना। श्ठां पर्मन, कति नातीशन, जारमण जामिक मन।। अखिरात एषि, राण यक मधी, अनह ब्राजनिस्ती। খাই উদ্যানেতে, পুৰুষ কিনতে,আইল ভাহা নাহি স্থানি वंगिष्ट (किमिनो, अन्द्र मिनिन, वार्ड) कर् हराब क्येर

व्यमा दर्ग, किरगंद्र कांद्रर्ग, जम्छ आन्र ठारांद्र।। बर्ग मुश्रीभन, मजीत ममन, अथारन कि मरन जाना। जूबि কোন লাতি, কোণায় বসতি, আমরা করি জিজ্ঞানা। ্রভানি মদ্রিবর, ব্রুহ তদন্তর, ভনহ আমার বাণী। পাট নায় ঘর, আমি চিত্রকর, চিত্র করিবারে জানি । এ **प्रतम् जानिया, नृश ज्ञान शिया, क**ित्रनाम अञ्चायन । खेनि नृष्यिनि,कहिलन चार्भनि, कि निमिर्छ चाश्यनः॥ বলি পরিচয়, কর্মোর আশর, রাজ অনুগ্রহ হইল। এই রম্য বন, থাকি অনুক্ষণ, নৃপতি আদেশ কৈল।৷ চিত্র , কর শুনি, রাজার নদিনী, কহিছে তারে সম্বর। কর চিত্র যত, আমারে পত্ত, দিতে হবে চিত্রকর।। শুনি মজিবর, হরিষ ভাতর, বলে বিনয় বচলে। যে আব্তঃ ভোমার, স্মত আনার দিব চিত্র ভব স্থানে।। আ-ैयांत नमन, नथी क्षक सन, निकार भागिरत। हिल मिव আম্মি, বাটী যাহ তুমি, স্থী হইতে ইহা পাবে।। চ-লিল কেশিনী, সঙ্গেতে সক্ষিনী, আইল অংপন আলয়। मानव हतिए। भाभनात वारम, मठक भामरक तन्ना। ভ छकाली क्षाम, मोठानाथ नाम, तानक मात्य मूजन। দৈতাকুলে স্থিতি, সেই মহামতি,রচিল কাগিনীরঞ্জন।।

পরার। মন্ত্রীর নিকটে নিত্য গিরা স্থীগণ। উত্তয়
তসবির আনে কেশিনী সদন।। দেখিরা চিত্রের শাভা
রাজার নন্দিনী। মনঃসুথে নিরীক্ষর দিবশ রজনী।।
বহুমত প্রশংসা করিয়া মন্ত্রিবরে। আনন্দিত মনে তার
প্রকার করে। উত্তম চেহার। মন্ত্রী ষত দেখি ছিল।
লিপিয়া কেশিনী কাছে পাঠাইয়া দিল।। শুক্সেনের
আশা পুরাব কেমনে। এরপ ভাবনা মন্ত্রী করে রাত্রি
দিনে।। এক দিন চিত্রকর রহিয়াছে বিসা তপ্রির

3

দুইতে গেল কেশিনীর দাসী॥ মন্ত্রীর নিকটে দেখি বাক্র মনোহর। জিজাবা করিল হয়ে সরস অভার।। क्ट् विज्ञकत अरह है हाराज कि लाएह। मिथा वाका ना कहित आगाम काहा। स्किश स्थीत कथा कहर ্টিরকর। উত্তর চেহার। আংছে ইহার ভিতর।। অমূলা চিত্ৰের মূল্য কেবা বিভে পারে। জ্ঞান হুরী হেন বপ निहि ध्वाभाव।। जागास्त ना प्रवाद । शहे मुख्य । ্আমার প্রতিজ্ঞ। এই শুনহ সম্বর।। চিত্র দেখিবারে যদি कान बाजन सिनी। जाशत निकटि कहेता याहेव आ-लित । याकृतप्र इन किन माहिक खनाला। अद्गिक क्रांत भावे नहेंगा याद जया।। धानिया बढीत नाका एड मिरीधन। किमिनीह निक्छिएक कहिल धनम। सन ैकीकुशानी त्यात्र। कृति किरामन। छेन्नस हिमाता आहि ভিত্তকর স্থান।। পাক্ষ ভিতরে রাখিরাছে হত্ব করি। देकन बाहि मिथाइन बनिट मा श्रीत । कहिन বৈশাবার যোগ্য ভোনর। নয়। যোগ্যপাত হই-লে তারে দেখাব নিশ্চর।। স্থীর বচন শুনি किमिनी कहिए। सिथिय क्यन हिड हिड्गाएँ माह्या यानांक कि प्रशाहत हिं यानाहत। केर महहतीयन करल हेरात ।। श्वनिया किनिनी वाका স্থিত সংগীগণ। সিনর পুর্কিকে তারে করে নিবেদন।। তো भारक मिथारद शर्ट नाहिक अनाथा। आखा केरल िख कृत जानित्वक त्र्था।। जामात्मत श्र्ल नाहि मित्व ক্ষাচন। যোগাপাত্তে দিবে পট করিরাছে পণ।। শুনিয়া निधीत वाका कहिए दुन्मती। (कमरमण्ड शृक्ष चानित असमूबी। अनिहा जाहात कथा यक नहहती। वाध-ইইয়া বলিছে কেশিনী বরাবরি। সাত্ সম্বোধন তোমার

ক্রেছে সে জন ৷ বাধা কি আদিতে ইথে ভোমার ভব্ন বিশেষে হরেছে র্দ্ধ তাহে চিত্রকর ৷ দে জন আইলে হেথা ক্ষতি কি তোনার।। যদি অনুষতি ভূমি করহ তাহার। পট লগে আনিবেক তোমার বালর । গুনিয়া দর্খীর বাণী রাজার ছহিত।। ভাহাদের প্রতি কংহ হয়ে रत्रिका। याकश्चित मधीशन किছू निया गरा। ना आहर সম্পেহ আইলে আমার আলর।। যাহ সহচরী বুর। করি: महेंचारन। कना रान महें लड़े आहत या छारन।। বত মূল্য হর ইহ। জিনিব নিশ্চর। বল গিরা ভার কাছে আনিতে হেথার ৷ কেশিবার বাকে স্থীগণ আন मिछ। महोत निकारे भिन्न इरेन छेलनीछ॥ ग्रहादी গণ কয় চিত্রকর ৯িড চিত্র সঙ্গে চল ঠাকুরবির অ্রু मिका। वामना इत्युष्ट है। इ. ११ माडे स्थित्त । च्याङ्का ক্রিলেন ভিনি থেখালে ফাইতে।। উচিত হা মৃদ্যু হয় बिरव ठाकुताणी। ताई हिज्या लाइ हमह व्याणानि॥ खनि नहहतीत कथा मिल्लान जाटन। यक मिल्ल दुविह তার আশা भूर हरव।। एकंत्रमञ्ज हरशता वरेशा मिल्ल বর। কেশিনীর নিকটেতে চলিল স্থার ।। চিত্রকার ছে-থিয়া সে রাজার নন্দিনী। আগ্রন আনিতে আন্তঃ দি লেন আপনি।। আজ্ঞা মাত্র বখী তবে আসন আনিল। नमामत्र कति छिजकरत बनाहेन ॥ किमिनी सूचती करही চিত্রকর কাছে। উত্তগ ভস্বির এক ভবস্থানে আছে।।সেই **ठिज्ञ अप्रे अप्रिका**दि वाङ्ग किति । भूना नदि अप्र आद्धी কর না চাতুরি।। কেশিনীর বাক্য শুনি সন্তোষ তথ্য। **চিত্রপট দিল দেই** রমণী সদন ।। চিত্র দেখি মূর্চ্ছাপর। रहेन किमिनी। व्यविधा हरेन मूर्य नाहि भारत वानी म চিত্রপট বেচিবেক কতেক মূল্যেতে। স্ত্য করি বল ইহ। আমার সাক্ষাতে।। শুনিরা তাহার কথা কছে। মতিরায়। লক্ষ মুত্রা দিলে পরে দিব গো তোমার।। সহচরীগণে ডাকি কহিছে সুন্দরী। লক্ষ মুত্রা আনি ইহার দেহ বুরা করি।। তক্ষা লইয়া পট দিয়া করিল গুম্ন। রচিল শ্রীসীতানাথ কামিনী রঞ্জন।।

ं লঘুত্রিপদী। রাজার নন্দিনী, চির বিরহিণী,দেখিয়া জিন্তম চিত্র। ভারে কবে পাব, সুখেতে বঞ্চিব, উচাটন रेहल हिन्छ ॥ कन्छ पिटन निधि, शिलाटन मिधि, के हिन्छ। मर्कक्षा वारमत वामनाः भाकत्त्र वामनाः, क्षतिन विद्र-शिखन । कहिएह (किनिनी, खन ला मित्रीन, सम आन-বাঁচা ভার। এ সুখ ঐথর্যা, হইল অসম, ধৈর্যা নাহি -बादन ब्याउ ॥ भग्नान चभरन, भार जात बान, किছू राज ना शाहे जुथ। पिरम मार्जवी, क्विड शाल कड़ि, रिपरिया साम्र दुक् । लालाश हमान, कात खालांचन, वमान हि-खन बार्फ । त्कांकित्न व सिन, वक्त मध भनि, धनी धना-ভলে পড়ে।। ছঃখ কৰ কার, পাণ ছলে যায়, ছুড়াবার-माहि द्यान । इन बिक माहि, ना प्रिथि केशाहर, बनाईन कूलवान ॥ ज्यनिशन तरन, ओन माहि तरन, मीतरन छा-विष्ट दिन । উত্তম दिननी, मश्टम (यन कवी,काल भारतम्त 🕒 **শেশী।। কপুর তায়ল, করে প্রাণাকুল, কিছুতে না হয়**া কান্ত। মলয়া প্রন, দহে হুতাশন, ২ইয়া বেন ক্তান্ত।। व्यक्तिश्व त्रवः श्वरन रेश्ल भवः, व्यव्याध ना मारन मरन । क्षेत्र्यावादि मान, ना रुप्त जानान, क्रमन्न वाँविदव প্রাণে। 🕾 🚰 থৈ যাতা দেখি, বলে যত সখী, শুন ওলো ঠাকুরাণি 🕫 ্রাইংশ**্পরিহর, যাতনা সম্বর, কেন হলে পাগলিনী**াা প্রাৰে গুণুমণি, কেন চিন্তা ধনী, সবুরেতে মেওয়া কলে। ৰিলাৰ ভাষায়, হৰে ক্লোদয়, কিনার। পাৰে অকুলে।।

প্রবোধ বচন, শুনিয়া তথন, কহিছে রাজকুমারী। চিত্রকর স্থান, করহ পরান, কহিবে বিনয় করি।। চেহা-রা-কাহার, অতি চমৎকার, কোথা আছে সেই জন। यमानि जाशात, जानि त्मग्र त्यात्व, जत्व वाहित्व औ-বন। কেশিনী বচন, শুনি স্থীগণ, চিত্রকর কাছে যার। नितानम् मन, कतिहा भगन, ভাবে कि एटन छेशाय।। र्मरुष्ठती भग, (मथिया उथन, मञ्जी मनामद्र करत । (कम ष्याभ्रमन, वनक्कांत्रन, ष्टृत्थिक क्ष्य खलुद्र ॥ श्रमित्रा বচন, কহে ততক্ষণ,কেশিনী দক্ষিনী যতঃ ঠাকুরকন্যার বুকি বাঁচ। ভার, চিত্র হেরি জ্ঞান হত।। কেমন সে জন, কহ বিবরণ, তত্ত্ব যদি জান তার। কোথায় বসতি, কা-হার সন্ততি, চিত্র আনিয়াছ যার।। মহিবর কন, শুন मथीनन, जात नाम एकमान। बाका भाष्ट्रमात, धार्माख তৎপর, গুণেতে ক্রীটা যেন।। আমি চিত্রকর, ছিলাম তাঁহার, চেহার। লিখেছি দেখি। দদা দককণ, করি যে লিখন, তাহাতে হতেন সুখী। মন্ত্ৰীর বচন, শুনি স্থী গণ, কহিছে তাহার প্রতি। যাহ পাটনায়, আনিতে তাহায়, রাথহ এই মিনতি। রাজার নিদ্দী, হলো পাণলিনী, তার প্রতিমূর্তি হেরি। বাঁচাও ইহারে, আ-নিয়া ভাঁহারে, আমরা বুঝাতে নারি ৷ কংক মজিবর, শুনহ সত্তর, কিঞ্চিৎ বিলয় কর। থাকি এক মাস, যাব নিজ বাস, কহিব তার গোচর।। জানাব তাহায়, न कानि कि इस, विनिष्ठ गांत्रि अथन। यपि मन इस, जां-সিবে ছরায়, আনিব করি যতন।। মন্ত্রীর বচন, গুনি नथोशन, চলিল কেশিনী কাছে। করবোড় করি, যত निरुप्रदी, ब्राह्मकनाम कहिएह।। छन ठीकुतावी नव खद्य ব্যারি, আইলাম মোরা হেথা। পাটনা বসতি, সেই মর

ক্তি, চিত্তকর বাস যথা।। শুকসেন নাম, অতি গুণধাম্ স্থাপতে কন্দর্গ জিনি। এই চিত্রকর, চেহরা ভাহার, ছে: बाल लोगात आनि।। पिथिता म क्रम, इहेल ति-कुष, चार्र्या अहमवाल। चार्मय श्रकात्व, तुवाहेश्रा ট্রারে, আনিতে কহি এখানে।। আনিতে তাঁহারে, যে প্রকারে পারে, করিতে তব উপার। শুনি চিত্রকর, কু ैहिल नश्वत, तुकाइस। कर छात्र।। यति आना रस, आ-দিবে স্বরায়, অনিতা ভাবনা কেন। যুচিবেক স্থালা, अस दाकवाला, स्ट्रेटव सूर्य जिलन।। এक शास श्रद्ध, দৈই চিত্রকর, ঘাইবে আপন বাস। বুঝাইয়া ভায়ে আ-্ৰিবে হেখায়, কেন গণিছ হুতাল।। স্থীগণ বাণী, শুনি শ্লা কেশিনী, কহিছে মনের খেদে। হয় কিনা হয়, কিনে ्रशांश तम्र,यश रम इश्यंत हुरम ॥ मास्तु मा तहम, करह मधी श्राव, श्रित इंड ठीकवांनी। याद्य मन कृत्य, इहेदक मूर्य, ্মাসিবেন গুণমণি।। নোডপুকুর খাম, ছোম বংশ নাম, विश्वां अविश्वां छत्। बाङ्या बहुगाद्य, विश्वनी श्रद्धाद्य, সীতানাথ দত্ত ভণে।।

পরার। এই রপে কেলিনী ভাবরে মনেই। প্রাণ্ কান্ত লা জানি মিলিবে কত দিনে।। তগরির এমন যার সে জন কেমন। জনমিয়া হেন রপে না দেখি কখন।। চিত্রকর হইতে হবে কার্য্যের সাধন। স্থীপণে ডাকি ভবে কহিছে বচন।। বিরহ বেদনা আসি করিল কা-ভার। সে বেদনা শান্তি হয় দেখি গুণাকর।। চিত্রকর জানে শীভ করিয়া গমন। কান্ত আনিবারে ভার করহ প্রেরণ। ছই চারি দিন মধ্যে যেরপেতে যায়। স্থীপণ ভোলরা করহ ভার উপায়।। শুনিয়া ভালার বাক্য বভ ভোলরা করহ ভার উপায়। শুনিয়া ভালার বাক্য বভ বটনে বলে মত্রিবর প্রতি। আপন দেখেতে যাত্রা কর শীভ্র পতি।। সমর অনুসারে তারে ব্কাইর। কবে। বিশ্ त्रकं कतित्म मत विकान हहेत्व।। अवस्य नाश्रद्ध श्रेक् কির বাঁচাভার। কাণ্ডারী বিহনে তরি না পায় নিস্তার । हारुकिनी मन श्रत किन्द्रतानी चाहि। वित्न नाति विति বণ কিলে প্রাণ বাঁচে ।। ধরাশব্য: ইইয়াছে নাহি শুনে वानी । नवीरन व्यवलां धरक छाएए विव्रहिनी ॥ शुनिसा अ नव कथा हिज्कत दहन। ना हहेरन भागा पूर्व डेडलां हरेटन ॥ व्यवना पाहेर मिटन कहिर जाहाय । ठाकूतानीत है মনোবাঞ্ছা পূর্ব থাতে হয়।। ছংখিত ন। হন যেন তাহার कांत्रण। यूहिट्द मस्मत कृश्य कांगिट्द (म स्नम।। हिल्क्द्र ञ्चारम श्रीम अञ्चल वहम । (किभिनी भिक्छे, श्राप्ति करत्र নিবেদন ।। ঠাকুরঝির কাছে আদি সকল বঞ্লি : ঘেমত প্রকারে চিত্রকর বলে ছিল।। গুনিয়া রাজার কন্যা হৈছে তথন। নিতা চিত্তকর স্থান করিয়ে গমন। বিদেশে বাহাতে বায় এমত করিবে। তাং: হইলে মই বাঞ্ছা পুৰ্ণিত হইবে।। শুনিয়া কেন্দিনী বাকা যত স্থী পাব। নিতা২ যায় তবে মন্ত্রীর সদন।। বিরক্ত করয়ে ভারে অশেষ প্রকারে। কোনলতে মন্ত্রির যায় নিজম্বরে চিত্রকর এই চিস্তা করে মনে?। পড়েছে প্রেমের লোভে ভূলিবে কেমনে। মদ্যাপি হইল অল কাফ্যের সাধন। অধানে থাকিয়া তবে কোন প্রয়োজন।। গ্রাজার নিক্টে ভবৈ বিদায় মাণিয়া। অত্রিবর কেশিনী বার্তা লইয়া।। শীতালাথ দত্ত কয় শুল বন্ধুগণ। যতন করিলে ঝিলে व्यवधा त्रुवन्।। क्ष्यां विश्वासी । जानम् ज्यस्त, यात्र महित्रत्, व्यवादन ज्या

श्रम्पा राषि काना हाल, त्रक्षिक श्रमान, कड़िया

बारमक क्रिण । दिखांग ना इंग्न, कार्यां मा त्रम, कार्या तिमि हहेब्राह्म कुठ ठाँहे चात्र, चातक अकात्र, नित्री ক্ষিণু করিতেছে।। বহু দিন পরে, মন্ত্রী আইল ঘরে, পরি बाँब इरेन मूची। महादि गकतन, बाजधानी हतन, मतन ইইয়া কৌতুকী । মত্রিবর যায়, নৃপতি যথায়, কর বোড়ে নোঙার মাথ।। মন্ত্রী আগমন, দেখিয়া রাজন, मिछीरम मकन कथा।। तन मही बन, जाशन कूनन, ब देखक विनश्च द्यान । ट्यांनात कात्रण, हिन्ति मर्ककण, हिना রাত্রি নাহি জ্ঞান।। যাহার সদন, করিবে গমন, তাহার कि रुल बला। एमर शितिष्ठाः, श्राण मास्त्रिः, स्पर्य पर শিল কাল। রাজার বচন; করিয়া প্রবণ, মানুবর ভাবে 🖏 ব। কহি আঘা অন্ত, শুন্হ রুত্তান্ত, যে জপে যাই छथात्र ॥ कामी डालकूभाडी, (किमिसी मुक्तेडी, शाहेत्र। এই সৰ বার্ড। রাজার নিকটে, গিরা অকপটে, নোঙ। ইয়া মাথা।। করি সন্তাবণ, কাশীর রাজন নিকটেনে ব্রুমাইল। মুন আগমন, কিলের কারণ, নরপতি জিলা भिन्।। छनिया वहन, कहित्ह छथनःहाकति आर्थना कति পাটনার ধাদ; চিত্রকর নাম; চিত্র করিবারে পারি।। এই কথা শুনি, বলে নৃপন্ণি; আমার নিকটে রহ। ষ্টাকি দাগগণ, বলিল তখন, চিত্রকরে বাসা দেহ।। রা-জার উদ্যান, সুর্গভূল্য স্থান, দেখানেতে আমি থাকি। बौना हिंब कति, पिरम अस्त्री, त्राक्षा जुके स्ट्रेन प्रस्थि।। ক্ষত দিন যায়, না দেখি উপায়, চিন্তায় চিন্তিত অভি। द्वैष्ययाल विधि, मिलाग्र त्य निधि। कहि छन त्य औ अकी। बाजवाण रहेटक, वानास नानिटक, सिक्तिक कांत्र निम्ती । मर्थीशन मक्त्र खदम बाना तरक बास्ता विश्व हरत करिया किया विश्व हरत सामा कीका करत

কেহ না দেখিতে পায়। যাইতে তথায়, দেখিয়া আ मान्न, जिल्हामिल भविष्ठता किश्लाम वानी, खनह मु किनी, পांठेबाग्न सम वाम। ठाकति कातनः (इथा स्वाध मनै, कहिलाम बाङ्गाह श्राम ॥ करह नुश्वतः कार कार्यो কর, বিশেষ কহ আমাধ। চিত্র জাব্য জানি, শুনি নূপষ-ণি,ভুষ হইল অতিশয়।। রাখিল আমারে, উদান ভিত-রে, করিয়া **অতি যতন। শু**নিয়া ভারতী,রা**জার সম্ভতি**। ডাকি আমা প্রতি কন। নেই চিত্র ২র, প্রতাহ আমার, मिटत अट्ड विजक्त । नशीवा अशिवा, सहरत गाहेसा, ष्यनाथः ना कत डांद्र।। अधे कथा वंत, मरव भाग विन, कांगि थाकि त्य यानाम । जिल्ला मधीनन, जानि मम ञ्चान, जन्मवित नार्वेत याद। कि निनीत मानी, अक मिन भामि, बाक्म एएथिन मञ्जूष । बहिटक ए बाहत, ब वाक्न विकास, कि बाहर येन आभारक : करिनाम ভারে, হরিব অস্তরে, উত্তম চেহারা আছে। শুনি মম वानी, कहिएह नकिनी, दिलाह सामात कोছে॥ कहि লাম ভারে, দেখাব কাহারে, না দেখি বোগ্যপাত্র। শুর্ শখীগণ, করিল গ্মন, বিধাদ ভাবিয়া চিত্ত।। বলিছে সকল, কেন্দ্রনীর স্থল, চেহারার বিবরণ। শুনিয়া अ वानी, विलल किनिनी, हिंद प्रिचिव किमन।। नथीश्रन यक, आमित्रा दतिक, कहिएह कामात्र कारह। हम दतुः। করি, রাজার কুমারী, তোমারে হে ডাকিতেছে।। জন্ম বিরের কথা, শুনি রাজ্মুতা, দেখিতে বাস্মা ভার শুনি এই কথা; চলিলাম তথা, চেহারা লয়ে তোমার !! द्राष्ट्रांत्र मिनी, कहिए जार्शन, अन अरह डिडकर्त ्रम्हें **ठिज्ञभंगे, आ**यात्र निकंगे, स्मृद्धारित गर्वत !! **किक**

. A.

किश्विभनी, विखन्न बाणानिः, वाल यूना नहेशा एकः।
किश्विभने वानी, स्थन शिक्तानी, नक यूना निहा नह।।
किश्वित कितन, नक यूना निन, किन कित नन्ननः। मा
निन्ना विमान, आहेल वानान, आनम्भिक हरम यन।।
किश्वित कितन, अहिल वानान, आनम्भिक हरम यन।।
किश्वित कितन, अहिल क्ष्यित वानान, अहिल क्ष्यो।
यक मधीनन, आमात महन, आमिन्ना विन्नक करन।
यक मधीनन, आमात महन, आमिन्ना विन्नक करन।
कालमिन्नान, किन्ना भागिना विन्नक करन।
कालमिन्नान, किन्नान अहिलाम स्वन्नान किन्नान किन्नान

পরার। মন্ত্রীর বাংন তরি তইল স্থাধান। অনেক
প্রশাস্ত্রীরে করে শুক্রেনা। মন্ত্রগার বলে ভূমি অ
সাধ্য সাধিলে। আমার নানস সব দকল করিলে।।
এক্লণেতে চল মোরা ঘাই ছই জনে। সেই চল্রাননী
ধনী আছয়ে যেখানে।। এতেক শুনিরা মন্ত্রী সন্তত হইল। ছজনে একত্র হয়ে তথার চলিল।। নদ নদী
ক্ষল অনেক এড়াইয়া। অবশেষে সেই দেশে উত্তরিল
পিয়া॥ দেখিয়া কালীর শোভা নৃপতি চিন্তিত। বিধি
মতে খুসি হল হয়ে আনন্দিত॥ উত্তম আওরাস এক
দেখে তার নাজে। দেখিতে সুন্দর অতি ভুবন বিরাজে
দেখিয়া বাটার শোভা ভূপতিতনয়। সন্তিবর প্রতি তবে
ক্রিছে বচন।। এই বাটা মোরে ভূমি ভাড়া করি দেহ।
আমি রহি এখানে তথার ভূমি যাই॥ ভূপতির বাকা
ভঙ্গে শুনি মন্ত্রির। সৈই অটালিকা ভাড়া করি সম্বর্ম
নুপতিরে তথা রাখি শীঘ্রগতি যায়। উপনীত হইল

शिया याकात महावा। धानाम कतिहा मही ब्रांट याङ् करत। मत्रभित श्रुष्टे रहेश सिथि विजकरता। ममामती कितश তाहादत रमाहेल। भूक घछ त्महे कर्त्य निवृक्ष করিল।। সেই উদ্যান ভিতরে রহে মঞ্জিরর। কাল্ कर्म करत मना अयुक्त चलता। किभिनी निक्रमी मर्क পথে দেখা ইইল। হাই চিত্তে চিত্রকরে দব জিজানিস ওহৈ চিত্রকর ভুমি কৃহ্ বিবরণ। মত্য করি বল তার कि इल अथन।। एनिया नथीत करा बदल हिजकता অ্রনিয়াছি এট দেখে সেই ওণাকর।। শুনি চিত্রকর কথা ছরায় চলিল। ঠাকুরঝির কাছে আদি সকল ব-লিল।। পাইয়া এ ভাভ বার্ড, **রাজার সন্ততি। মনে**২ হর্ষিত ছইলেন অভি। ভাকাইয়া মন্ত্রিবরে করিল জিজ্ঞাস।। তুমি নাকি পূর্ণ করিয়াছ মস আশা।। চিত্র কর কহিছে ফেশিনী ব'ক্ শুনি। আসিরাছে এই দেশে त्नई खनमणि । शृशक वाना जिलि चाटक व त्रद्या রাখিয়াই ষত্ন করি উত্তম আওয়াসে ৷৷ সেই সভা হ ইতে এবে হইলাম পার। বৰমান্য দেহ ভারে করিয়া अठात । विषाय रहेया मछी आहेल वागाय। किलामी ভাৰত্যে মূলে কি কৃত্তি উপাত্ত।। স্থীগণ সঙ্গে যুক্তি ক-तिছে उथन। कि बालटा कति छात्र मान्यक मिलना। লুকাইয়া আনি কিয়া জানাই পিতারে। এই তত্ত্ব সংগী পণ বলহ আমারে। শুনিরা তালার কথা দাসীপুশ करर। नुकारेगा अरे कर्मा कता जान नरर ।। त्रानीत कि কটে তুনি গিয়া অতঃপর। বিবাহ করিব বলি জানতি नवृत्त्र । विवादहर् जिसि यपि दून कानुम् जि। वर्गमा क्रिंदेर एकरमन मद्रशिष्ठ ॥ द्रावीत निकटि उत्त क्रिन श्यम्। त्रविष विशेषामाथ कामिनीत्रक्षम्।।

जिल्ली। त्रांनीत निकटें यात्र, अकृत इरेगा कांग्र, विवार कतिवात कात्रण। मत्नामस्य कठ जात्व, किरम कांक शिक्ष करन, कि बालाज कति निर्देशन। रयकां-নৈতে ছিল রাণী; দেইখানে গিয়া ধনী, করযোড়ে প্র-बोम क्रिल। विक्रित भारत्रत शह तावी देकल आनी सार, ৰুসিতে আসন আনি দিল।। কৃহিছে রাজভাবিনী, ভাল ত আছ কেশিনী, বহু দিন পরে হইল দেখা। ছুঃখিনী स्मनी বলে, বুঝি পাশরিয়া ছিলে, কি মনে করিয়া আ हैल पका।। तांगीत दहन छनि, किमिनी कश्टि वांगी, ত্তব আশীর্মাদে আছি ভাল। তোমার বারতা বত, भागी कर अवितः , मस्ताष्ट्रं अ अक्ट गकन।। (य निः মিত্তে আগমন, তাহা করি নিবেদন, বুবে তার ক ब्रह् विहात । इत्ला धोरम छेम्य, कत हेहांत्र छेशाय, वार्ण करि एक चयुष्ठत ॥ एकरमन नृश्याणि, नर्व छान মহা এণী, পাটানার তাঁহার বসতি। আসিরাছে এই দেশে, রহিয়াছি বিভা আশে, এবিষয়ে দেহ অতুমতি॥ ্চিত্রকর স্থানে যত, সকলি হয়েছে জ্ঞাত, ভার তথু সব श्रांति স্থানি। ডাকাইয়া চিত্রকরে,জিপ্তাদা করহ তারে, মিথ্যা নহে আমার এ বাণী।। কন্যার করণা শুনি,ভাবে अत्यर द्वांगी, मजा वर्षे देशंत वहन। द्वांगी किमिनीद्व बल, यांक आश्रम सहत्त, तांकाद्र कृतिव निरंत्रमम्। পাটনাধিপতি যেই, তব পতি হইবে দেই, ইথে ছুঃপ কি আছে অন্তরে। কহি রাজার গোচর, দিব আজি বর श्चित्र, व्यानारेश्वा त्यरे नत्रवत्त्र ॥ सारम्रज्ञ अत्वाथ वागीः 📆 नित्र। (कमिनी धनी, शानक मत्नट्छ घरत आहेत। आश्री भून तुकि इल, मधीनापात विनन, धनि मार्व इहेन छछ द्वाल । ब्राबात निक्टि तानी,कहिट्ट कमात वानी, क्रमर

अरङ् नदक्षता कमा। वाश दल्लाह्म, तालाञ्चादन निदंत मिल, श्रुमि ब्राङ्ग इहेल प्रयत्कात्र । ब्राङ्ग परल अभ রাণী, সর্ব গুণে ঘেই গুণী, তারে কল্যা করিব অর্পণ। লিখিয়া পত্তের পাতি, যত-আছে নরপতি, আলাইব আপন ভবন।। রাণী বলে নহারাজ কর না এমন কাজ, শুক্রেমে করেছে বরণ। পাটনার 'ন্থিপাত, দে হবে কন্যার পতি, ছহিতার হয়েছে মনন । ভোগার যে চিত্র কর তাহারে জিজাসা কর, দেই লালে ভার স্মাচার **७कश्रांत आना**धेका व्यन्तिनीत अह विका, **उत है(थ** श्रद क्ष जिकात । ऐतिहा यहां के कारण वाहित रहें মানে চলে, সিংহাণাল বদিল রাজন। রাজসভাসদ चल, इहेलन हेशनील, चात दल गणा हता अन्।। (इन কালে নরপতিঃ কন চির্ভর প্রতিংচির্ভর মৃত্যু করি ৰল। শক্ষেণ নূপবত, তথ্ব যদি কাল তাত, বিস্তারিয়া कर्रा भक्त । राज राज निजकतः पुष्टिः । नुश्त कतः, चामा पाछ एकार जाकारह। एकी जाता सके मन, ভালি পাত্র মিবগুল, বলে ভারে আন সহাধরে । নুপ্ তির আজে। পাইয়া, চিত্ররে সঙ্গে লইয়া, ও চ্ছেনের काष्ट्राक जारेत। यदालाख नदलाक, हिथेसा शाहेना পতি, আদ্য শত প্রিচয় নিল। শুভক্ষণ দিন দেখি, ब्राका गरम हरस सूची, राहे शास्त्र मिल कम्मा विद्या। সক্লেতে হরণিত, করে বেদ বিখি মত, রাণা ভুট জাঃ मीजा (म रिया।। উভয়ের मः निवास, উভর আনন্দ মনে, किছू निम उथात्र विकल। लटन डांक अनुमांक, आहेल निक वंगिक, धेर काला घरेना रहेन। काळ १व महाभाग, প্রাপ্ত হইবে তাহায়, নেই চেফা কর সর্বক্ষণ। হই 🛊 লকি ভাবান্তর, বিধি মতে চেন্টা কর, তার সকে হইবে

कामिनी तकन

मिनन। श्रीन एक्त रहन, ब्रक्षन चानन मन, वह विश्व धमश्मा कतिन। भीजानाथ में बला, एनस वसू नकला, चिन्ने से धिनक स्ट्रेन।।

व्यथ बंध मग्डा

দ্বিতীয় ঋণ্ড।

भावीका छेलाचान।

প্যার। ওকের বচন যদি হৈল সম্থোন। অতঃ-र्शतः अवह मातीका ऐशाया व। तक्षाम कशिरह **मात्री** হিনায় বচন। মাম ইতিহাস এক কর্ছ আরেণ। 'অ**ন্বেশ**ু ক্র ভ'রে পাইবে নিশ্চিত। সাধন করিলে কায়া হইকে ছরিত।। উতলার কর্মানয় শুন মহাশয়। যতন করিলে বুডু মিলিবে নিশ্চর।। হিমন্তনগরে এক আছিল ভূপতি স্মাগ্রা পৃথিতী সাশিল মহামতি। শিংটর পালন. করে চুটের সংগ্র। গুণ মনে খ্যাতাপর আছি ল স্পার্টা বর্ত্ম কর্ত্ম অর্জনিশি করে নৃপবর। না কেরে অনিউ কর্মাজ্লা দিগছর।। এক দিন সহাবালা ভাবিল অন্তরে। মূপরা করিতে যাব অরণা ভিতরে॥ আজ্ঞ, দিল মন্ত্রিবরে করহ সাজন। ইঙ্গিতে সাজিল তবে यड रेमनाभग।। कोनोह्त अविभान भइन कानन अक फिल्ड कदत गरव भूभ व्यत्वयं।। देशदवत निसंक मृभ् না পাইয়া তথায়। নিরাশা হইয়া চিস্তা করে নৃপরায় 🖈 ষাভয়িতে মৃগ এক পাইল দেখিতে। মনোহর রূপ তার বিস্তার বর্ণিতে।। সুবর্ণ জিনিয়া দেহ বিচিত্র নির্দাণ। বুজতের প্রায় শোভে খুর চারি খান।। আক্র্যা হইল শ্বিপ দেখিরা কুরক। উথালল ইচ্ছাসিকু আনন্দ তর্ক।

দৈনাগণ প্রতি ডাকি কহেন ভূপতি। মৃগ যাতে ধরা ্ষায় কর শীঘ্র গতি।। যাহার নিকট হৈতে পলাইয়া খাবে। সম হ'নে উপযুক্ত দণ্ড দেই পাবে।। এত হান সৈনাগণ কুরজে বেজিল। বাবধান হইয়া তথায় দাঙা हिन्।। भ्रताकात जय देश्य ताष्ठात वष्टरन । ना खानि कि कटल आंकि देवरतत घंटरन ।। तांकात निक्टे पिया कूत्रक शंनाम्। व्यक्ति वागुरवरम मृशं शिहूर शाम । व्यवस्थि **म्हि मुश** करन अस्योगन। एतिया त्राकात स्थाक दिखा बाजिल । इतिराद्य रहित यठ हत्यहिल मूथ । राहे जामा ভক্তে বাড়িল বড় ছঃখ। বৈন্যগণ ছাভি রাজা বহু দূর . आहिल। इसकारन मिरांकत सङ्द्रांटन हालना तसनी (स्थिश अंक चैक देश्य म्हा चाद उत्य श्रामिमी विश्वह (कपाना। आक्ष निरीष् वन छोट प्यक्तकोत्। ব্যান্ত ভালুকে পাছে করয়ে সংহার।। কেন আইলান ৰনে মুগয়া করিতে। কি আছে বলাটে কিছু না পারি दिनिष्ठ । मञ्जूष्य स्विष्टिं। एक हक मास्य हत्। व्यवस्थिय উঠে রাজ। তাহার উপর । ক্ষণকাল পরে তবে ংমথে নুপ রার।বাছা ভল্ল কত আইল তথায়। তাহারা নিনাদ করে অতি যোরতর। নিঃশবের হহিল রাজা না সরে উত্তর ্মনেং চিন্তা করে বিপত্যভন্তনে। বিপদে আ্পিয়া तकः। कत् वक् वरनः।। करान मुग्न कक (परंथ अजनात। নিখাসেতে ঝড় বহে অতি ভয়ক্ষর।। নানা জাতি হ্রন্ত क्ठ क्रिन एक्रन। स्थन क्रिएं उथा क्रिया शब्दन।। क्रिप्कान भारत मर्ल कतिन भगन। मौजानाथ एख ेरेश कतिन तहल।

, नष्जिभागे। इत्कार, छेश्द्र, यस्थ नृश्वतः, ज् डीव क्षड्रं 🔻 त्रां जिल्लामध्या घटना कत्र धाववाणितराज मुसत कालि है

निविष कानम, चिछ सूरभावन, मनुश गहिए माति। प्रवर्गन ञ्चान, रश चनुमाम, जूनना नाहि मःभारत ।। नाती धक्कन, प्रिथिन त्राजन, ज्ञान कति हा तत्र। प्रिथित मुठाम. व्यक्ति व्यक्तभम, श्रक्षवान नाय माक्र ॥ क्रिनि भा-শধর, তঃহার অধর, ্যন স্থির সৌদামিনী। ভুরু শরা-मान, कछे। क्षेत्र वार्ण, त्यावित्त भारत धत्रेगे ॥ मृष्ट्र मान ছালি, সুমধুর ভাষি, রসিকা রসের সার। প্রোধ্র তার, वर्त माथा कात्र, कविष्ण मात्रस्य कवि । जिल्लून क्रिकि, नामात उलनि, गटकळ्याचिनी धनी। क्लिंगिम जात, **७३ त- आकात, क**ति अति अति शिवि ।। मृत्यत य शर्व, क्तिब्राहि अर्क, जाकात का धूमि भाषि । जाजत जुलना, কি দিব উপনা, হারিল খঞ্জনপার্থী।। নিতম্বের ভরে, (मिमिनी विष्ठाद, काञ्चिमारन कहेन माणि। मत्न यद हम, व्हित्र नाहि त्रत्र, हमटक्र फिठि ॥ झिनि इल्लक्ति, हरखत অকলে, চক্রমা থিনির। ক্যোতিঃ। লক্ষের আভার, क्लो नज्जा भाग, भाग करत अन्छ ॥ इरस्त जूनमा, मुगान इन मा, किमान (शन करन। केइरम्भ जाते, कम्नी कि हात, नाहि स्थि ध्वांडला। मस्रक विननी, दंगन कालक्षी, शुर्काश्टरत भाजा करत । किंवा गरनाहत, ত্রিবলি সৃন্দ্র, লোমাবলি তার পরে।। দেখিয়া ডাহায়, ব্যস্ত নররায়, জিজ্ঞাস করিল তারে। কোথার বসতি, কর রস্বতী, সত্য করি কৃহ সোরে।। দেখিয়া ভোমার, প্রাণ নাহিরয়, হইরাহি হতজ্ঞান। রূপা করি ধনী, वंशक कारिनी, किरम रूर्व शतिखान । दंक रेट्ड ताम, নাম্বিরা হরার, ভাহারে ধরিতে যার। হাসিয়া বুবতী, क्टर दाका थार्ज, दनि धन भतिष्य।। ना धत दोक्रम, किन अरचनेन, यपि त्यादने आखे रूदन। केकिन नरत, रून

মম ঘর, তলাস করিলে পাবে ॥ রাকা সেই গ্রাম্,হীরা-লাল নামে, আমি যে উহোর সূতা। ছংখ পরিছর, নাছি চিত্ত। কর, ইহাতে নাহি অন্যথা। মনুষ্য হইয়া, रकमन कतिहा, मगागरत जुमि यारव । मश्च व्यक्ति भात, ্ছর সে সহর, অনেক যন্ত্রণ: পাবে।। সে ভূর্নম পথ, যা-**্টিতে** বাঘাত, ঘটনা ঘটিতে পারে। না জানি কি হয়। र्षेषि थाप तस, कत्व (म शहित्य त्यात्व ॥ এতেक वहन, कहिता उथन, कना। अपूर्वन देशन। नृপতি চিন্তিত, क्ष्रेन मृष्ट्रिंड, वित्रकालत्न महिल ॥ टालाक त्रस्मी, त्रिश्व मृश्यार्थि इतित काश्यन वाटम । हरे दिन श्रदत,ताका रगन मद्रतः मस्त्रिष्ठा सम्बीभारम् ।। ताक्षकाद्या यष्ठ, तत रेह्न हर, त्र वनीदत हिला करता कर शिल विधि, निलाद मिसि, छित्र ना इद्र चाखदा। अकता याहेगा, नकान कतिया, यांच भारे भ कभनी। बाचिव सीतम, मनुता अप्रतन, दित्रक नांभरत जानि॥ (म कान तभनी, छान क्य क्षी, इत्रा प्रभाव चाति। ना प्रिच छेशांग्र, छा। दा-হিরায়, লাগিয়ে অনক ফাঁদি। চিন্তানলৈ ফেলি, গেল यमि हलि, कि बारण कीवरंग हो है। डाक्टांस आधात. शिन रम रकाथात, मृजूा मण इत्त्र चाहि।। पिता प्रतमन, देश्य चामर्भन, विविष्ठ ज्यामात धान। मरनत मानरम, পিয়া দেশেং, করিব তার সন্ধান ।। ভূপতি তখন, হইয়া গোপন, যায় কন্যা অন্মেষিতে। কত স্থানে কত, দেখে व्यंतित्रक, रुग्न वाङ्ला दर्निटि ॥ मिता निर्मि यात्र, ना तर्ह কোথার, ভাবিরৈ ভাহার ভাব। কত উঠে ভাব, নাহি^{ৰ্} चन्चर, (कर ना दूरक मि चारा। चक्रावाद शर्भ, (भग चार्गिष्ठ, नशत नार्दि यथात्र। निविष्ठ कानन, नाहि कान जन, निर्देशक उथा यात्र।। इहेल तक्रनी, उर्द

नृश्मिनि, इंट्यानं खेशदा थाकि। প্রভাত ইইলে, ছাবি-' আস্তে চলে, ফলাহারে প্রাণ রাখে।। বনজন্ত যত, দেখে অবিরত, তিলেক শকা না করে। সীতানাথ বলে, শুনহ্ সকলে, পড়েছে নারীকুহরে।।

ं शशांत । हिन्छात्र हिन्छिल मन त्रम्भीत ভাবে। ভাবে माम त्रं धनीत्व कठ मित्न शांता। वाषा वंत्न कि इहत्व शां-ইব কোথায়। কেমন করিরা আমি দেখিব ভাষায়।। बिशांक्रण विवि वृक्षि नावित्वक वान । दल्या निवादम बन भगी चढीरन अभार ।। अहम मिल महिला जाहा हिला चौन। मिया निम्मि दम खांचादम खांनाटक इहेल ॥ जूनिस्म ভুলিতে নারি যেন জপমাল। পলাল হধিয়া প্রাণ করি কত ছলা।। এত ভাবি নরপতি করিছে গ্রমন। সুরতি আশ্রমে এক দিল দরশন।। ভাবে মনে গাবীগণে জিজাস। করিব। ইহাদের কাছে তার তদন্ত পাইব।। हो। ९ शास्त्र साध्या युद्धिनिति नय। किञानि कि कटन আজিনা জানি কি হয়।। এত ভাবি নরপতি লুকায়ে त्रश्लि। भत्र मिर्न भारी नद हित्रतारत शला। भारीत আশ্রমে রাজা কৈল অগুনার। গোমুত্র ফেলিয়া সব কৈল পরিস্কার।। হইল উত্তম স্থান দেখিতে সুন্দর। পুনরায় লোপনে রহিল নৃপবর।। যতেক সুরভিগণ আত্রমে आहित। अतमिन महे काल हतिवादत भिन्। व्यामिश्रा ভুপতি তবে পূর্ব দিন মত। বিধিমতে সেই স্থান কৈল পরিক্ত। নিতাং এই ৰূপ কররে ভূপতি। দেখিয়া সুরভিগণ আনন্দিত অতি।। ডাজিয়া বলিল ভবে কে चाह वचारन। मुख्छे स्टब्सि बाता यक शाबीशरण।। আলিয়া সাক্ষাৎ কর দিব যোরাধর। তোমার মানস পূর্ণ হউক তৎপর।। এত শুনি নরপতি তথা প্রবেশিল।

व्यवाम क्रिया क्रमुष्टि माधारेल ॥ स्टिनि नावीशव কররে জিজাসা। এঘোর অরুণো বাছা কিকারণে আসা ্সত্য করি কহ দেখি নাহি কোন ভয়। মনের মানুন। कहि थेखाँ ह विश्वाय ।। जित्तिहा नदश्कि करत निर्दाहन। अन्य आभात यक कृष्ण विवत्ना। এक मिन प्रश्वा क-্রিতে যাই বনে। মূগের না পাই দেখা দৈবের কারণে।। बाताहर मृत ५क एत्थि (प्रहेषात् । जाम्हर्ग १४ म (इन माहि बिष्ट्रया शामात निक्षे हहेटल भगाहेता एात्र धंतिएक वामना कृति भिलाम बनात । जनरमध्य महे मुन करन अर्दानन। (प्रिया महत्त्व मध्या विकास छ-र्मित ।। उथन इहेन जामि रिता जनमान । शहनन **भारक रे**श्न स्ति कम्पायान्।। पारकारव छेठिनाम ऋत्यन्त **উপরে।** ভাগা ক্রমে বাছিলাম সে যোর দুন্তরে।। ্বিক্ষের উপর নিশি বঞ্চিতে ব্ঞিতে ৷ এক নারী আসি (मथा मिल | शांकश्चित्का । मिलिएक सुरमत (यन भन्दमत तिक ैं मन श्रीण इंद्रण कदिल (ग युग्डी।। काक्ष्म महद दिश्या छाहा नाहि छ।नि। भतिष्य मिन शैतायात्वर समिनी कारव्यर्ग शांद्र भारत कहे विल लिन। महे काविश्व मन े আৰু আকুল হইল। আসিয়াছি রাজ্য ছাড়ি তারে: ্যদি পাই। নতুবা ত্যাজিব প্রাণ না মানে দোঁহাই॥ ঁ শুনিয়ারাজার কথা কছে গাড়ীগণ। হয় কি নাহয় তার সঙ্গেতে নিলন।। সপ্তম্সমূতপারে কাঞ্ন সহর। তথা বাস করে এক দৈত্যের ঈশর।। তার কল্যা হয় সেই अनम्प्राहिनी। इन कति (एथा (काति मिन (म तम्पी।। ৰভুই অসাধ্য কৰ্ম করিবে কেমনে। নর হয়ে পারিবেক মাহি লর মনে।। দে লব ছর্গম পথ সপ্তার্ণব পার। ध्यय मक्षिए क्षित हत भात । ताक वल कि इ-

है (व वनह फेशांस । क्रमन क्रिया आभि याहेव छथात ॥ শুনিয়া সুর্ভিপণ বলিল ভাহারে। পথের সন্ধান সঙ্ বৈবিধ প্রকারে।। হেথা হইতে বার জোশ যখন যাইবে। তথা এক নিশাচর দেখিবারে পারে। প্রকাণ্ডশরীর তার বিকট আকার। যাবে তারে ধরি দৈতা কররে আহার किन्द अक कथा विन छन निया मन। मधाइ कालाङ ज्यां क्रिय शमन।। जाहा न। इहेटन द्नि धार्याक মরিবে। অন্য সময় গেলে তার যুখেতে পড়িবে।। हुई अहत नगरत रम ना थारक उथाया नारि जानि নিশানত কোথার বা যায়।। পথের বারত। যত পাইয়া ब्रांबन। अगर्मना भागीभाग कृतिन भगन।। य सूल जूल রভিগণ বলিল ভাহারে। নিশাচরে এড়াইন দেই ष्मसूत्राद्ध ॥ नांदी य ष्यमृग्य धन नाहिक कुलगा। जांब क्रमा कृद्ध ब्राष्ट्रः ज्यमाश्चा भाषनः । हावद्ध ब्रमनीभनः व्यक्ति विश्वाकृत । भूकारबात मझारिया क्लन कर थून । हाल दल कोमाल काष्ट्रिया नरस यन। अक्षीया माधन करत করিয়া যতন।। আশা পুর্ণ হৈলে পরে তত নালি রয়। ভালবাদা দেখাইয়া ক্রমে করে ক্রমা সীতানাথ দত্ত সংঘ खन दक्षभा। नातीत नायाय छारे जूनना कथन।।

ত্রিপদী। সে বন পশ্চাৎ করি, চলে ভূপ বরাবরি, রাজ্য সের ভয়ে প্রাণাকুল। ক্ষতান্ত নিবিড বন,কত করে দরখান নারীভাব ভাবিরা আকুল। রমণীপাবার আশো,না রছি ল প্রাণ বাদে, রাজ্যত্ব করিয়া বিসজ্জন। ভাবরে তাহার ভাব,নাহি অন্য কিছু ভাব,হেন বন নাকরে গণ্ন। ভাদ ভাবে নরপতি, যদি পাই সে যুবতী, তবে হবে এ গুংশা মোচন। তাহারে পাবার লাগি, ইইয়াছি সর্বভাগীনা

कानि कि रहेर्त अथन।। त्थानन त्थानक त्यरे, त्थान চিন্তা করে গেই, অরসিকে বুঝিতে না পারে। অবৈরে बर्गन पिरन, माहि उठ कन करन, পश्रकां जित्र मा जा-बिद्रा। य ना जान त्यन्त्रभशः इसना ठाट उपाठ, त ্রাথ্যেতে কট্ট অভিশর। বুরোনা যে অপমান,নাহি থাকে কোন জ্ঞান, করে সদা ছরম্ভ আশর।। না দেখি কোন উপায়; উভয় সঞ্ট তায়; দিলীর লাডুয়া সম গণি। ীথাইলে অতি ক্লেশ হয়, বে না খায় সে পস্তায়, ইহার ত্রিন্ত নাহি জানি।। যায় রাজা অবিপ্রান্ত, কোন মতে লাহি কান্ত, তৃফাযুক্ত হইলেন অতি। নিকটে না পায়া। ্রাক, ভাবিয়ে হৈল বিকল, প্রাণ যায় কি ছইবে গতি।। दिस्योधा (शत्न शांव वाहि, किरम शिभाग। निराहिः कमः বিষ্ঠে পাই পরিত্রাণ। ভাবিতেং ভূপ, সমূখে দেখিল कुंग, मनगार्थ केन कालभान ।। छित रुख नेत्रताम, वर्षे ্রকৈর তলায়; আন্ত দুর ক্রিছে বসিরা। এমন সময় , খান, খাশ্চর্যা হৈল ঘটন, সেই কথা কহি বিস্তারিয়া।। ্রেই রক্ষের উপর; বাস করে নিরস্তর; ইপেল নামেতে 😰 পক্ষ। শাবক রাখিয়া সেথা,যায় ভারা যথা তথা,আ निवाद्यं डाशास्त्रं चक्या।। निकटि ना थामा शाद्यं, উट्ड প্রাধ্যে ভরদিয়ে; গমন করছে স্থানন্তির। পিতা মাতা না दिविश्वा, काटम जाता दिनाहिया, क्थानत श्रवाह की ছব।। করিতেছে কোলাহল, হইয়া অতি ছর্কল, কেন किए। बांछा मा बाइन। शुनि कनत्रव सनि, छथा धक শাইদ কৰী,ভাহাদের গ্রাসিতে ইন্ছিল।। তাদেখিয়া নর প্রিভি, ইয়ে রাগান্তিত অতি; সর্পেরে করিল শত খান 🗈 बर्द्शन क्षारम हिन, शकीशत बाहरखं मिन, महत्वि क्षेत्रा क्षेणावान ॥ किथिए विलय्त शह, गुनः क्षीय का- - उर, करत चाँछ कनत्र ध्वनि। शाद्य यह गार्म हिन्त, करमर कारि मिन, पंत्रायुक्तं इत्य नुश्मनि ॥ ऋवा मास्डि হইলে পরে; পিত। মাতা আইল ঘরে: জিজাদিল কু र्मन बात्रका। कर् शृंख कि लानियाः सरस्र विष्ठत देश्ररी ভাণ্ডাওনাকহ সতা কথা।। নিতা কর কলরব, অন্য দেখি যে নীরব, বৃধি করিয়াছ অভিযান। ব্যথা লা ভার**ি चह**्रत, भ'ईनाम अठि पृरव, थाना खवा कदिए नकान्याः चामात अत्निष्ट थतः चतात्र कालात कत्र, भूशाननः हिन् য়েছে প্রবল। যত ভূগে শান্তি হবে, অনারাদে প্রীক্ পাৰে: অধিলয়ে হইবে শীতল।। তাহাদের বাকা শুক্তি भावक कहिएह वानी, असा सूबा पृष्ठा किছू नाई। कहि कटव निर्देशनाः एक ग्रंब विवर्तनः (यह कटन काना तकः। शोहे।। इक्रडात तथ हात्य, त्य क्रम चार्ट्स वितिस्त ক্রিয়াছে বড় উপকার। ভুজক্তে খাইতে এল, সে ব্লি भारत बच्छा देकन, कतिश्चा भारतीत मध्यात मध्यात मध्यात य बारमं हिल, आमारएरत बाउताहेल, शूनसीत क्षाक আকুল। আপান অঙ্গ কাটির'; সেই মাংস খাওরাইস্ক विशासिक देशन नास्कृत।। ० अपनेत सेशकात, विकशः করিতে পার, তাহ। হইলে মনে পাই প্রীত। পুজের বচন শুনি, রাজারে কহিছে বাণী, অন্তরেতে হয়ে আরি হলাদিত।। শুন ওহে মহাশয়, বসতি কর কোথায় कि নিমিত্ত হেথা আগমন। এ অর্ণ্য বীজবঞ্জ নাহি দেখি কোন জনে, গুনি তব আশার কারণুৱা ताजा वल तरहे कथा, अनि मत्न शाद वाथा, कहि उद्दे . अन पित्रा मन। भृशता क्रिटिंड आणि, रहेनाम दले भारती, प्रभाव ना भारे एवणन।। वकेंग्री कूवन (एथि, मान महा रहा मुनी, धतिबादत देशन मन मन। मृश यात्र

ক্ষতি উতে, পেলাম ভার পশ্চাতে, বারি মধ্যে কৈল श्रनीयन ।। त्रवि षाष्ठांच्या श्राटन, श्रेष्ठापत कानास्टन, ক্রিএক রক্ষের উপর। ভয়ক্ষর শব্দ কত, হয় দেখা। ব্রিরভ, ভয়ে প্রাণ কম্পে থর থর।। ভূতীয় প্রহর গেলে कि द्वार्त (इनकारन, এन এक बशवर्जी नाती। बरशत ক্রিক্রব কথা, চমকে বিত্যুৎলতা, তার ৰূপ বর্ণিবারে ক্রারি॥ দেখি তার রঞ্জন্ম, কন্দর্পে দহিল অন্স, ধরি-बाद्धि क्तिन्न शप्तन। धता ना मिल क्लानी, वटल पृष्यन्त शकि, भारत रशास्त्र कत अस्थित।। काक्षिन गरत यथा, कार्यों जारह उथा, शैतानात्नत कना। तर श्रा কাছে সপ্তাৰ্ণৰ পার, সন্থান কে করে তার, সে আশয়ে क्षित्र वर्षित तम् ।। देशन कटर मचत्र, मन्त्रीमध्या रेथिंग ৰক্ত আমি ভার করিব বিহিত।। লয়ে যাব ভার কাছে। ইথে কি ভাবনা আছে, তাহাতে না হইবে ভাবিত।। ক-্রিরেছ যে উপকার, শুধিতে নারিব ধার, সুস্থ হয়ে থাক कुंबि (रथा। शांद्धांक ना बान्त हिन, खेरथ कानिया क्लिन, बारन इन पूर्विन म्याथा। नीजानाथ एख बटन, ক্রাহার অন্তিম কালে, এক। কর হরি দয়ামর। অধ্য लामन खरन, द्वान त्र कितर ठत भार एक धिम दश्र ।।

পরার। ইংগলের বাক্য শুনি নৃপ হর্ষিত। কর্ই প্রানীকেননে করিবে মম হিত ।। কাঞ্চন সহর হয় সপ্ত শ্বাক্তি পার। কি রূপে লইয়া যাবে তাহার ভিতর ॥ সেই শ্বাক্তি বারে পার ওছে দিতে। তবে প্রাণ পাই শামি প্রাক্তি হেহতে ॥ যদি তুমি পার কর এখোর তুরাবে। বিশ্বান্ত হইয়া সামি রব তব স্থানে ॥ একেক বছুগা শামি পাইতেহি বনে। এ সক্ষ্ণ শাক্তি হবে স্থান্তর

भिन्द्रमा। कर्र ने भार कर्म ७८६ शकीवत्र । जूनिएक मान्निय जामि उर उनकात ॥ नृशिवत रानी श्रम देखाँ उथन। चोथात कतिया छाद्र कहिएह नहन। पूषि र्जांठ भर्मवस त्रिक् मूज्य। व्यवना मिलाइव विधि छान्। রে সে ধন । কৃতসাধ্যে উপকার করিব ভোমার। এতেক বিনয় কেন কর বারবার।। কল্য তোমার সেই দেশে। লইয়া বাইব। যে ৰূপে ঘাইব তার উপায় করিব।। চর্মের সিন্তুক আছে আঘার নিকটে। তুমি ভাহে ব্যক্তি য়া থাকিবে অকপটে।। তিন দিন লাগিবেক করিছে शमन । এইकार कव जरव कल चार्वण ।। कल कल स्वा সেই সিন্তুক ভিতরে। তাহা না হইলে ক্লেশ পাবে, অনা हारत ।। मृन्य मार्ग मित्रा यांव ट्यांमात्र लहेशा। ना হিক ভোমার ভর থাক ভির হৈয়।।। তিন দিনের মত कन क्रिन मथ्यत । ताथित्यक कन जानि शक्कीत छा-লয়।। প্রদিন প্রভাতে উঠিয়া নৃপ্রর। কহিছে পক্ষীর প্রতিশর্ম অন্তর।। ওছে প্রাণ্মখা লইয়া যাহ মেই थोरन। किছू नाहि ভान नार्श ठांत अवन्ति। खनिक् তাহার কথা সেই পক্ষীবর। সিন্দুক আনিয়া এক 📆 লেক সত্তর।। ফলজল সিন্দুকের মধ্যেতে রাখিল। নত্ত্ব পতি তার মধ্যে আরোহণ কৈন।। হর দিনের আদার ब्यानिया भक्तीनत्र। भूखभरभत्र निकरि प्रित्नक प्रदेत्री চল ওহে প্রাণদ্ধ। বলিয়া তথন। সিন্তুক লইয়া প্র ্উঠিল গগণ।। অভি বায়ুবেগে যায় নাহি অবসর। খিয়া তাহার কর্ম রাজা পায় তর। তিনু দিনু গিয়া कर्न तरे प्रभा शाहेन जिल्हा वाख जीत निन्दुक मान्या काकनगर्रत चाबिश्राहि महाभाग कि ेक्क युनिया नथा छेठर पत्राया। खनिसा शकी व कथा

শ্বাকা আনন্দিত। বাহির হইল তবে হইয়া স্বরিত।। িবিংস্মে তাৰ ভাতি বিভার করিল। তুমি স্থা হইতে ्रिव ए उपकात हरेग।। एव गग वन्नु स्थल अस्तर शाहे। ্ভোমার মৃতন স্থা তিভুবনে নাষ্ট্র।। পক্ষী তবে নুপ ুবরে করে উপদেশ। দাবধান হইয়া থাকিবে এই দেশ। ুঁথকেত দৈত্যের রাজ্য তাহে নারীআশা। সংগোপনে িকোন ভাবে কর গিলা বাস।। রাজসুতার বাদি যেই ুষাভাগাত করে। বিনয় পুর্ককে তুনি কহিবে তাহারে ুতিৰে ভব বাঞা পূৰ্ণ হইবে নিশ্চর। এতেক বলিয়া **পক্ষী** ্সাগিল বিধায় । নগর মধ্যেকে রাজা কবিল প্রযেশ। ভাবে মনে ভিতৃত্ব নাহি হেন দেশ।। गনোহর অটা িলিকা অভি সুশেভিন। অনুমান হয় যেন ইংক্রের ভবর প্রতিষ্ঠে গান বাদ্য নাহি চুঃখ লেশ। পুরুব রম্ণী ·**করে মনে**ছির নেশ।। পরম্পর দৌল্দাত করে নর্ক ্জান। যার ঘেই কর্মানেই করে অনুক্ষা।। বালকেতে বিন্যা শিখে হংর একমন। যুবকগণেরা ধন করে'উপ। জ্জন। দোকানি প্রারিগণ আছে নারিং। খদের দেখিলে তার। লয় আগুসরি।। অনাচার কর্ম যদি হৈকান জন করে। তথনি দে দণ্ড পার রাজার গোচরে বৈষ্ঠবন্ত গুণবন্ত হয় যত জন। রসিকতা পরস্পর মিষ্ট স্থালাপন।। বয়েসের জ্যেষ্ঠ ঘেই রাখে তার মান। ीं तरनारं साभी द्र साहि करतं जाशयाम ॥ जानमान शांक থেই নাহিক উপার। রাজার নিকট হৈতে মাসহার।: পার।। দেখিয়া নগর শোভ্রা হিমন্ত ভূপতি। অনেক व्यभारमा किन शरा शके बैंडि॥ शत्न शत्न श्राह्म जून ষাইৰ কোথায়। কে আসিয়া স্বাপক্ষত। করে এ সময় ষাইতেং এক নিয়রকা দেখে। তাহার তলায় ভুপ ৰ-

দিল কৌভুকে।। কেমন করিয়া আমি যাইব তার कारह। यह विका हिला कति उह । अभाग न मप्त अक चाहिन नाश्चिती। অর্ছেক বয়স তব্রিসিকা দেঁধনী।। ছেড়াচুলে খোপা বান্ধা দত্তে গোলা মিসি। নাগর বিহনে নাহি থাকে এক নিশি। দিনা নিশি পর নিন্দা খুজিয়া বেড়ায়। অভিজ্য কোন্দল করে কারে ना खत्राग्न। 'इटल दरल कथा कठ उन्न व्यक्ति। य-ছেতা তুলিয়া মুখ করেছে উচ্ছেল। আংতার চুপ্তি कारच घन घन होता भारताए। पिता बात सानाहेशा यासा। धार्यम रगर्ग काल कांका भा शाक्षि। तुष्का কাল হল ত্রু আছেলে কিঞ্চিত।। অর্থিক জনে লিছে कथात चुलाय । यस किया है। का वट्य ठेकाहेम। थाउ ॥ माखिमी कश्टिक करत क्षिकित काश्या मका कति वन গুত্নোর দিখা লাগে।। কোন দেশে থাক তুলি ভো मात्र कि गाय। सामारत विलिद्य मिश्वि देश्व समस्याम्। হৈথার বশিয়া ভূমি আছে কি লাগিয়া। ইকার কারণ -(भारत क्ष विल्लाहिता ॥ शुनिशः जाहात वाका मत्राजि रता धानिसाहि यह परम वाना माहि भिता । जुनि ।কোন জন আদি চাহ পরিচর। কিবা জাতি ফের यह। (कान वावमास ॥ नृत्भित वहन खनि कहिएह मुन्दती , জাতিতে নাপিত আমি নিজ কর্মা করি।। রাজার ছ-াহিতাবড় ভাল বাসে মোরে। মানিক নিলরে মোর তাহার গোটরে। আমি হড় অভাগিনী নাহি মোর (कर। वक् बाक्षव नाहि कत्रिवादत द्वर।। श्वित्रा औ। হার বাকা রাজা মনে ভাবে। ভাল হল এই হৈতে কাহ্য সিদ্ধি হবে।। নাপ্তিনীর প্রতি তথ্ন কহিছে রাজন। रिमलनश्दत राम कति अनुक्रण।। आमित्राहि अभग कति

ট্রন্থ এ সহর। বাদার কারণ আমি ভাবি নিরম্ভর ।। কো পায় মুক্তিৰ আৰি কি করি এখন। শুনিয়া দাপ্তিনী जारत केहिए वन्न।। आहेन आमात नरक विविद्या रत्र। अर्शनिनि शांक जूमि जागांत जानम्। ठात गरिक मुश्रवत कतिन शमन। दिवन श्रीनी डामाथ कामिनी तक्षम जिल्ही। न्भवद्व मद्य नद्य, नाश्चिमी (य निष्ठानद्य ममगारथ जानि छेउतिल। कोनिश्न थातीत चारक, উত্য পুছনী কাছে, नःগোপন অভি রমা হল।। ए-ক্ষিণে যে মর ছিল, তালা ভুণতিরে দিল, করে অতি প্র कूल काखुत्र। काश्रादित छन्। यठ, मक्न कृति श्राष्ट्र छन्। द्राक्तिनाद्ध कविन नव्द । विभएक अधिकाती, तत्त्रन ट्याक्यन करि, निलातस्य कृष्टिहित व्यक्ति। छेठि श्रवाफ শবর, প্রাতঃকৃত, নারি রাম্ন, এক মনে পূজিল এছরি॥ শ্বরার বাদার আদি, নাণ্ডিনীরে কৃষ্টে হাদিং মাদিকের कत्ररु निर्वत । अथरम निर्वार्था कत्र, स्टबनाक कथांखत, **म्यार** शाहि इह कविनया। नाशिनी शनियाक्य, खन्ध छन गरामध्र, चामि चित्र क्विनी तम्बी। तरिदन मयानम, केंद्रिक (य मृत) रुध, मन्ना कत्रि निर्देश जाशिन দাপ্তিনীৰ বাকা শুনি, কহিতেছে নৃপমণি, ছয় তঞ্চা পাবে প্রতি মাসে। বঞ্জা পূর্ণ হলে পর, বিধিমতে পু-क्रकांत्र, क्रांत्रव य मरनद मानता। त्रहिलाम उव चतः সম্পর্ক নির্ণয় কর, কি বলিয়া ডাকিব তোমায়। নাপ্তিনী কহিছে তারে, হরিষ হয়ে অন্তরে,পিদী বলি ডাকিছ আ आंग्र ।। कि जाना कतिया गत्न, जानियाह এই ছালে, ভাৰ কিছু না পারি বুঝিতে। আছে তব যে বাসনা, প্রকাশ করি বলম। চেন্টা তার করি বিধি মতে॥ এ ८७कं रहन खनि, मृश मंदिकात जानि, जांका कह हाहारत

कहिल। इस कि न। इस खानि, रेमठासांखांत निमनी, (यह ब्राल्स मत्रणम मिला। नाश्चिमी निह्ति करा, नामानी .এ কর্ম্ম নয়, কেমনেতে কৃতিব তাহারে। হইলে পরে क्षांनाकानि, প्रांग निया ही नाहि। कि क्षक रहित जिमें हैं সারে।। নরপতি বলে তারে, অত্যন্ত বতন করে, কি इटेरव रल सम शिखा विसन्न श्रीतिक छात्त्र, कहिएव आ मात उत्ह, कुलाह कि तारे अनवडी। यहि कामि তারে পাই, কলঙ্কে নাহি ডরাই, যাক প্রাণ ভার নাহি रथम । अत्रेश सर्वास्त्र भिन्नो, आभारत रा रम्था मिन्नोही তীক্ষ শরে কৈল মর্নাভেদ। যে জন প্রমিক হয়, কলকে নাহি ভরায়, মরণের ভর নাহি রাখে। মজরে যে লাগে। হার, সে হয় উত্তম ভার, দোষ কৈলে গুণ ভার দেখে !! সময় বিশেষে তবে, ৩ ছঃখ তাহারে ধ্ববে, যেন তার पदा एवं मान। जहां नांशि श्टेल जांत, मकन सात का मात, जत आंदा कि काम जीवरन।! ना कहिरत अम मग्, यमि এ निकल रहा, किरन रूरत मम व्यवाहित। मत कामा छक हरतः विवहानहरू पहिरवः अछ। प्र पि**रत**ः महा द्वाछ ॥ ভाहाद वहन छनि, कहिएइ नालिनी धनी, স্থির ছও ভাবনা অন্তরে। ভাবশা তাহারে কব, বিধি মতে চেফা পাব, ঘটাইতে পারি যে প্রকারে॥ শুন্থ बाहाश्रम, मात्रीरक ज्ञादित मन, धन कान गर कंद (स्ता त्यि ख्रिकां करत, अकाम कत्रस्य भरत, उत्रिवां নাহি দেখি ভেল।। তার দেশ তার ভূমি, কি বোল ব निरव ज्ञि, श्रांग लागांत नर्व जनात्रांता। इस्य वर्ष ष्मभाम, किया भग नम्र थान, माहि स्नामि कि इहेरदे ্শেরে।। তথাচ ভোমার লাগি, 🖣 কর্মে হয়ে উদ্যোগী ार्सिय जा भावि कि ना भावि। ठणूत यह रा धनी, भारे कांत्र नितायिन, जना नातीत यक नरह नाती।। नाश्चि भीत करत थित, कहिए निनय कित, এই कथा जारत किया कर। जिता जतानात नार्त्व, मजारस हिमस्तारक, कितियाह कित्या निध्य ।। द्वाय नाश्चिनी थनी, यथाय ब्रोकेनियाह कित्या निध्य ।। द्वाय नाश्चिनी थनी, यथाय ब्रोकेनियाह कित्या निध्य ।। द्वाय नाश्चिनी थनी, यथाय ब्रोकेनियाह कित्या निध्य ।।

श्राह । नाश्विभी: द्र प्रिच उत्व रिएकाह मिलनी। श्रिविहान हरन किছू करह जारत नानी।। चाहेनह नाश्वि िकी पिनि शरएरह कि घरन। तन २ এত निम हिरल कोन স্থানে।। নাগর নহিলে ভুমি থাক এক নিশি। এবড় আ শ্চর্যা কথা শুনে পায় হাসি॥ বুড়ীহলি তবু ভোর খেদ मा बिष्टिन। क्यार कृता ७ रक्तु कतिहा कि हन।। ना-खिनौ कहिए छाद्र विनय वहता। निष्ट दन श्रीत्राम कत स्मात नरन।। कि सिथि ज्यानित रक्त नाहिक सी-বন। শুক দুলে অস্বার নাহি লয় মন।। তোমার মৃত যদি ইইতাম যুবতী। অনেকে করিত বাঞা করিতে পিরীতি। তোমার যৌশন কাল হইল উদয়। বিবাহ मी फिन शिका नक्कांत दिवते। दिवहिंगी इर्त कृति कर কলি রবে। তোমার ভাবনা আমি মরি ভেবেং।। এ-ं उक रहन यगि कहिन नां खिनी। छाहारत्र पर निशा किह कहिएह म अभी। अञ्चाशिक यह मिन नम्य इहेरक। वियोर रहेरव भात करकरक प्रिथित ॥ किरमत जावन। েতার আমার লাগিয়া। পড়বীর নিতা নাই ভুলে যার বিয়া। নাজিনী কহিছে তারে করিয়া মিনতি। এক কথা निरंबम्ब कति तमवकी।। अञ्ज अशान् यदि कंद्रहे जारे मारका पाक्ति। नकन कथा करिव कामारक।। बीकाव मिला करत विलाह काहोरेता अच्या अमान आवि

क्तिलाम (छारत्।। ज्ञा क्ति वल एशि त्रहे क्थी গুনি। হাসিয়া নাপ্তিনী তারে কহিতেছে বাণী।। "পর্বা माञ्चारक कारत हलना कतियां। निविष्ठ रुहेता ज्ञि तरमे বসিয়া। তব ভাষ ভঙ্গিনাতে মক্সিয়া সে জন। এক্সারে হইয়াছে বাতৃল যেমন। সপ্তার্থন পার হয়ে এনেছে এ-थान्। वाना कति तस्त्रिहरू जामात जन्म। य कार्भः ছলনা তুনি করিলে তাহায়। গৰুল বিষয় সেই কহিল আমায়।। বতন করিয়া তব কাছে পাঠাইন। বতেক মনের ছংখ দক্ষল বলিল।। তাহারে আখাদ যদি করছ अथन। अदिभारत जात जात वाँहरश खीवन ॥ नाहर जार् हात थान तम कि ना एम। व्किया कत्रह कर्म जान गाँउ हरा।। माश्रिमीत कणा खिन जा कर्या हरेन। ভাবে मस्य কেমনে সে এখানে আইল।। একে সপ্তাসুধি পার ভাহার निवाम। तस्त्रत कि कर कथा लाहि मिललामा । अस्तकः नक्षिण क्यान टेहल शांत्र । युक्ति ना शांति आर्वि এ কেখন নর।। করেছে অত্তুত কর্ম অসাধ্য সাধন है ब्राष्ट्राधन नकलि मिश्राटह विनर्द्धन ।। এकान्छ आयार्क প্রতি মজাইরা মন। পর্মত জব্দল কত কৈল পর্যাটন 🗓 ৰভই প্ৰেমিক দেই চভুরের সার। অবশ্য করিব তার আশার রুসার।। পিতা নাভা ইহার সন্ধান যদি পার। নর বলি তাচ্ছিলাত। করিবেক তায়।। করাচ আমার मस्य दिन ना श्रेरत। आभाव लाशिया स्मर् बार्लस्य मतिरव ॥ (एथ) पित्र। जारत कतिलाभ अभीकातं। स्म বাকা লংঘন হবে কেমনে আবার। ধর্মেতে পতিও হব বে হৈলে নৈরাশা। তাহাতে যে করিয়াছে ছরস্ত **छत्रेगा।। मध्येगीभाग वर्त्रमाहा क्षित्र अमान। निन्धिष्ठ** स्रेत रेश विषे थाक थान ।। नाखिनीत क्र कि करह ती-

ব্ৰুৱ ছহিতা। বড় ভূফ হইলাম শুনি তব কথা।। যথাৰ্থ अगुद कथा किছू मिथा। नय । সংগৌপনে धना छाउ প্রামার আলয়।। পিতা মাতার নিকটেতে না করুপ্র क्षाम । वरे कथा खिनटल इहेरव नर्सनाम ॥ नाखिनी কাহিছে তারে বিনয় বচনে। এবড় অসাধ্য তারে আনি-তে গোপনে।। যদাপি ভূপতি এই কোন কথা ভনে। পিলকেন্ডে প্রলয় করিবে ততক্ষণে।। দৈতে।র ক্ষারী बोल छम्न कि তোমার। घটना इहेटन शाद इति या इन ষার। সমুখে উদ্যান আছে অতি মনোহর। কলা রাত্রে এনো ভারে ইহার ভিতর।। বির্লেভে এনো যেন জেছ নাহি জানে। আসি যালা বদল করিব তার সনে।। হৈছে। তবে এই কথা অনাথানা হয়। কলা রাত্রে আমি थाकिव ज्याम ॥ अञ विल नालि नीत विनाः ক্ষরিল। রাজার মন্দিনী বড় আনন্দে ভাসিল।। নাপ্তিনী इतिष हरत कतिल भगत। गीलागाथ एव हैश कतिल . राज्या

मध्विभिष्ते। माश्चिमी उथन, आश्वन उदन, आहेल आनम्म मत्न। आद्रवात जात्व, त्कमत्न करत, क्ष्यू द्वत्त मार्गाभात्न। अकि देश प्रायं,ना प्रिथि उभायं,मिष्टा का श्विम मण्डत। श्रीका यि भारत, वाँ प्राप्तिन। श्वीप्ति, श्वीप्ति मण्डत, जानाहे नद्वत, ना श्वीद्व अमाप्त परित । यि न्भवत्त, जानाहे नद्वत, ना श्वीद्व करने। निष्ण श्रृहिजात्त, ना प्रित हेशात, विचाप श्वीव अमा । तिष्ण श्रृहिजात्त, ना प्रित हेशात, विचाप श्वीव अमा । तिष्ठ नाश्वत, हेर्द कांज्य, यि जात्र माहि श्वीप्ता । अविन ना तत्व, श्वाप्ति आत्रित, मिष्ठ प्राप्ति । अविन ना तत्व, श्वाप्ति श्वीद्व , विद्वा द्वार्थ । स्वाप्त ना वाह्य न, श्वीप्ता कांजि, विश्वत द्वार्थ । स्वाप्त कांजि, विश्वत द्वार्थ ।

इत्त । कतिल बात्रण, शिखात समन, कृमांच देश मा करत् हैं जाहात समक, हम कालाखक, कामित्त ना हत्व विल्ला देम्डा अधिभाजि, इत्व ब्लाध माजि, का नाहे एव कन किर्येश বাচীর সদন, আহে রমা বন, উত্তম উদ্যান তথা। কলী त्रस्नीत्क, कहिन याहेत्क, हेशात्व नाहि अनाया। बि टिक वहन, खनिया ताजन, आनम गंशद हारम। इ-ত্তের অনুরি, দিয়া ছবাছরি, নাপ্তিনী ধনীরে ভোষে कहिए जूभिक, नाखिनीत थाकि, कतित य छेभकाता। थंड निन छीर, हेश मः जूनियः अविशास हरेनू शाइ ভুমি যে হিতাদি, হুইলে গো পিসি, কহিতে নাহি 🥦 शाहा जामात कावन, जनाशा नायन, कतित्व न्यादम ভায়।। এতেক বলিয়া, নিভা স্থানে গিরা, শারন করিল स्र्य। (পाङ्गल मक्ती, इतानाय यात्रि, প্রভাতে উঠে को তুকে। কর্মা নিয়মিত, করিল ভাৰত, স্থানাদি ভেজিন देहन। मधाह भगत, त्रिल निखाम, भारत देवकाल आ-हेल।। मिरांकत लात्म, हाट्स कर्नर, कठ कर्म तिव यांग्र। इहेटव जिलम, आमिष्ठ यम, तक्रमी देहल छेरश ॥ हिश्याय मुक्तती, नास महहती, छेम्यान ज्जिटत शिक्षा है च्छो निकाश्व, फेठिन महत, भटन श्वित श्रीता । वि-ছানাদি যত, বিছায় তাৰত, আনি তোৰফ প্ৰভৃতি ! काषु दिनशिति, तार्थ गातिर, कानरम ब्लाफिट्ट वार्कि माना चाद्याञ्च, क्रिन उथन, मुनक्ति कञ्जि हुता। मन नामि यक, कतिन श्रेष्ठक, कश्रत ठाघून एता ॥ चाम् क्ता यक, देवन विधियक, आनिन शुष्त्र हमान। शालानी . चौड्य, चात्र (लादशांत्र, मोत्राट श्रम् मन।। उन्हा कामभूता, अकि मानाहता, भाव बत्राज आपि कति। वि

ক্তে বাছলা, হইবে ভাচ্ছলা,লোকের নিন্দাতে ভরি।। হ-हैल भेक्डी, दाम जूस कति, वित्रण शालाकाशरत । कर्ज कर्त थनी, (मर्थ छन्मनि, इंश जातित्ह जलता। हा-খায় তখন, হিমন্ত রাজন, রন্ধন ভোজন সারি। বলে नाश्चिनीत, रेबिय क्षाउरत्र, नास छन बता कवि ॥ देशन ব্রুপ্রভাত, ছইবে সাক্ষাৎ, তার সঙ্গে সংগোপনে। বিরহ याजना, करेंदि भाउनां, त्म त्रमनीत मिलतन ॥ व्यक्तिक बंबनी, निषिता गालिनी, कहिन छाहात अछ। कतह ুসুবেশা, করিতে প্রবেশা, রাজসুতার বসতি 🛭 তবে যুব क्कांक, क्रिया गुत्रांक, एविन नाश्चिमी मद्यः। मश्ताश्मेन ্পথে, চলিল ভ্রিতে, অভিশয় মনোরসে।। ক্লাকাল 🥍 त, छेमान ভिত्र, अदिभाग हुई करन। नाश्विनीरत संचि, रत्न यात्र मधीर हन ठाकूबानी द्वारन ।। त्महे रिधू ্র্মুখী, নাপ্তিনীরে দেখি, দেখে সঙ্গে গুণাকর। অতি ছরা ছবি, অভার্থন। করি, বসালে পর্যাক্ষোপর।। নীচেতে नाश्चिमी, विश्व जाशनि, जाशव जानिया दिवा। নাগরের প্রতি, চাহি রসবতী বাঙ্গ করি জিজাসিল।। 🗠 कतिया कि गत्न, क्वन वहे छात्न, हेहात कांत्र वन। त्रम्गो थल, चाहेल चवरहल, म्रान्ट मका ना हला। স্থিনি তার বাণী, কহে নুপ্রমণি, যা কহিলে মিখ্যা নয়। ब्रद्भारक शिता, जाबादत हिलता, जानिताह निजा-িক্র।। তোমার কারণ, করি পর্য্যটন, ভ্রমিলাম্ দেশেই। अस्तक यजन, कति প্রাণপণ, आदिशोहि वहें (मर्म्) ুঁজাসিতে হৈথায়, বলিলে আমায়, নাপ্তিনী পিদীর জ্বাছে। তোমার কথায়, আসি যে হেথায়, ইথে সম্পেহ बादह ।। कत्थालकथन, कत्रि इहेजन,शद्र शान याना इत्ना। तक्षनीत (नारव, यरनत इक्षिय, माना बमन कः

বিল।। জলপান করি, পর্যাক্ষ উপরি, সুখে করিল भारत। इतिकाखंत, कतिरंश विश्वत, छेल्या किन मिनन শ্যার বর্না, আর করিব না, ভাবে বুবহ সকল। দীতা-नौथ पछ, कति এक कि छ, अरे शक् वित्रित ।।

পয়ার। রজনী প্রভাত হয় এমন সময়। দৈত্ সুভার নিকটেতে মাগিছে বিদায় । বৈনইপ্রৈয়সী আসি না পারি রহিতে। যদ্যপি হেথায় কেচ দেখে আ্ত-যিতে॥ এ পিরাত ভঙ্গ হবে প্রমাদ খ্টাবে। জানিবে **দৈত্য** রাজন মম প্রাণ লবে॥ এই বেলা চুপে২ যা**ইৰ**ী বাসায়। যাবৎ তপন দেব না হয় উদয়।। শুনিয়া তা-हात वाका कहिएह ग्रन्मती। ना इटत कामादत मथा त-হিতেন। পারি।। কেমনে সিদায় দিব ওছে গুণমণি। वधिन व्याबात व्यान व्यानि मिनवान।। मुभु त्मर नाम ष्यामि तहिव अथारन। मिनग कि काल यादि ভাবিতেছि মনে। প্রেরণীরে শান্ত,না করিয়া নররায়। নাপ্তিনীর সঙ্গে তবে আইল বাসায়।। নিতা নিয়মিত কর্ম কৈল স মূর্পণ। প্রেয়দীর ভাব ভঙ্গি ভাবে অনুক্রণ।। গগণেতে কখন উদয় হবে শুশী। এই চিন্তা নূপবর করিভেছে বিদি।। রজনীতে প্রের্দীরে করি দরশন। তাছারে শ **एक भन इग्र छेहारेन।। त्रात्राक अक मरन ज**िर्दे ষেমন। দৈতোর নাদিনী চিন্তা করিছে তেমন।। ভাবিত্ তেই আইল সুখের যামিনী। রন্ধন ভোজন তবে করি नुभगित ।। अरक्ता (अभ्रमी काष्ट्र आहेत उथन । अवद्रा উভয় হেরি হর্ষিত মন।। নাগরের করে ধরি ব্যাইল कार्ड। वरन वक्करन खांन स्ट्रिक वरम्रह्॥ इस्म दरंग अन श्रिरा दिन य जामात्र। प्रिवरमण्ड थाकि जामि हरत्र क्ष आत्र ।। यावर ना त्मि जामि उव मुक्

अवृत मांशरंत পिए नितानत्य जिन ॥ यन मार्थ 🐞 হলে রজনী বিথিল। নিশি শেবে নরপতি বাসায় আইল।। এই রপে নিতাং করয়ে বিহার। সুখের সা-'सरब जारंग नागदी नागद।। এक मिन निमिर्यारभ हि-শৈষ্ট রাজন। দৈত্যসূচার গৃহে করিছে গমন।। এমন শূমিয় শুন 🐃 শহর ছেটাল তারে দে-শ্বিল তখন।। ভাবে মনে এই জন কোথাকারে যাবে। ইবৈশ্ব হয় পড়েছে কোন রমণীর ভাবে।। নচেৎ এ যাত্ত ক্রোথা এঘোর নিশিতে। ইহার কারণ মোরে হইবে জানিতে।। মিথ্যা কথা বলিবেক জিঞ্জাসা করিলে। প-শ্চাতেই তার সংগোপনে চলে।। রাজকন্যার উদ্যানে क्षादभ कतिल। प्रथिया कांग्रेल रफ् चांभ्ठरी इहेल।। ্রিলে আমি দেখিব এ কি করে এখন। পশ্চাতে উদ্যানে তার করিল গমন।। দেখিল উঠিল গিয়া অটালিকা শৈরে। কি করি এখন বলি ভাবিছে অন্তরে।। অট্রালি-্রীকার সম্থেতে রক্ষ এক ছিল। তাহার উপর উঠি ্রিসিয়া রহিল।। প্রাশনের দার খোলা দেখিতে পাইল। রাজকন্যার সঙ্গে সেই যে ৰূপে বঞ্চিল'।৷ কোটাল ভা-विष्ट्र वारन धार्रिय अथन। कठकार्ग अहे रविष्टे। कृतिरव শিমন। এতেক ভাষিয়া গেল অটালিকাপরে। নিঃশফে ক্সহিল গিয়া বারাভার ভারে।। প্রেয়নীর কাছে তবে বি-লীয় ৰাগিয়া। হিমন্ত রাজন যায় সেই স্থান দিয়া।। হেন কালে কোটাল ধরিল তার কর। বলরে নিলভ্র বেটা ইকাণা ভোর ঘর।। মরিভে বাসনা করি আইলে এই ছারে। জাজি ভোরে পাঠাইব শন্সবভনে।। এতেক हिन्दि। छोरत रक्षन कतिन। त्राजात मिननी छनि छथात्र व्यादेव।। (मृत्य व्याननात्य कात्र भरत्र ए क्लिके व्यादेश)

नन कांत्रह (यन कांना खिर कांन । मान कांद्र द्वाजरक ना प्रिचि निष्ठात । প्रांगकारिंड त्रांका प्रार्क्ति कतिरव मश्ह র ॥ কোটালের প্রতি কহে রাজার ছহিতা। বিনয় 🙀 र्क्टक रहारत कहि वक कथा।। धनिश्रम हुनि भात कर्न পরিত্রাব। প্রাণকান্তে বাঁচাইরা রাখ মম সান। বাহ চাহ ভাহা निर नाहिक अनाथा। को गेव कहिए **उद**् গুনি তার কথা।। রাজার কুমারী হয়ে এমন ব্যভার 🗓 कुल कलक्षिनी याथा कांगिल बाह्याव ॥ ज्यार्थत वामना किष्ट नाश् सम भटन। हेहारत नश्ता दिव दानात 🛊 एरम्।। त्कारे, त्वत्र छ रन देकत विद्धत मिन्छ। हाफाइटक रा ना विन धाननिक ॥ कि होटन कहिटह धनी কান্দিরাং। প্রাংকাত্তে পরে যাহ আমার বধিয়া। অংশ যদি মরিভান তাহা ভাল ছিল। প্রাণমখার এবি शह प्रशिट्ठ इहैन ॥ दहाम्यन शिष्ट्र दशी कृत्रच छाह्न ई वादम् र राष्ट्र अविनादयम् नम्म ॥ छथानि स्म काउँ दनके मदा ना खिलात । द्राञ्चात निकटं वाहि वहेता যश्चिकति রাণে তারে আপন ভরন। সীতানাথ দত্ত हिंश कि जिन बरन।

ত্রিপদী। প্রভাত হল শর্মা, চোরেরে বন্ধন করি,
যায় কোটাল রাজসন্থিন। মন্ত্রীগণ স্থিভারে, বনি
যাছে দ্রবারে, প্রভাতেতে ভূমি ক্সমান। আহ্মণ
মণ্ডলী যত, নকলে হয়ে বেটিত, রাহ্যাছে ভূপতির
কাছে। নকিবেতে ফুকরার, কালোওয়াতে গীত পার
সমূপে গোলাম খাড়া আছে। প্রজাগণ কর লয়ে, আছে
সরে দাঙাইয়ে, কার মুখে না সরে উত্তর। আ্বানানী
করিদী যত, মোককনা করে কত, ভটকেতে পড়ে রার
নার। সাবধান হয়ে অভি, বিচার করে ভূপতি, সার

नाक ना दम छोड छोटन। दारे केन स्वी हतः तर्किछ क्षेत्राप्त, वर्षमाट्य दर्गन विथादन ॥ वह बटल देनछः लेकि, रूस सामिन्ड यांड, ताककारी करत वक मान। क्ष्रीमें व कर नरम, नृशिवत कार्छ शिरम, छानि मिन ब्राइ विशामात्म।। कोगेल कहिए वानी, एमर मुशमनि, वह বিটাবিড় ছুটমডি। ধর্মপথে নাহি মন, পাপ করে ক্লিমুক্ষণ হরে সদা পরের যুবতী।। তব ছহিতার সঙ্গে, বুঞ্জিল পরম রকে, কন্যরাতে ধরেছি ইহারে। তব ক্রা ছ্টম্ভি, কুলে হৈল অখ্যাতি, ধন প্রাণ সপেছে জন্মরে।। বাথ হয়ে রাজবালা, বিস্তর খোরে কহিল; ক্ষাৰ্থ লয়ে ছাড় গুণমণি। আমি কহিলাম তারে, না ছা 👺 व ७ (तुष्टी दत्त, ल दत्र याव यथ। मृन्यानि ।। व्यक्तक तु-ক্লীক্স মোরে, ছাডিয়া দিবায় তরে, অবশেবে কান্দিল 🚂 📆 । শুনিয়া তার বাণী লয়ে চোর চূড়ামণি,, কুরে আনিলাম সহর।। এ সকল বার্ড। শুনি, ক্রোক 🌉 मुभन्नि, কহিছেন তক্ষরের প্রতি। সভা করি কছ ক্ষ্মাঃ কেমনে আইলে হেখা, কোথা হয় তোমার বসতি ছহিতা হরিলি যোর, আজি প্রাণ লব তোর, নাহি দ্বৈষি তব অব্যাহতি। তুমি হও বড় খল, পাবে সমু-किंद्र फल, पुष्ठाইव চুরির প্রকৃতি । জিল্তানিছে নুপ্রবি, इर्ल्डिज ना महत वानी. जात कि हूं मा कहत छे छत्। अस्ता ক্রি প্রতি কয়,লয়ে য'ও এ বেটায়, যুত কাটি আনহ স-🐞 । পাত্র মিত্র যক জন, নৃপ্ররে সভাষণ, করে অভি বিষয় ব্চলে। শুন্থ নরপতি, ইহাতে হবে অখ্যাতি, अमिर्देशात वथर कीवरन ।। ताथ नदा कांताभारत, नि-शहर्यक्रम करत, माछि এই ছर्व्हरमत शक्ता ठकाक सी व्यादन मात्र, कात्राभाष्त्र यथा करा, रेश जान वधात भ

लिक । मकल ता वाका छनि, छक् रसा मुश्यनि, खर्का दिन প্রতি छाकि कन। তবে চোরে ना विश्वा, बर्का छ छ । अध्या मिश्रा, काताशास क्रम बर्का । ताणांत छ क । छ नि, काठाल छारास छानि, काताशास वसन क तिल है । इर्थ श्रा हिया, तार्थ वर्क छाशास्त्र। श्रा काता है इर्व श्रा का । श्रा छ शिष्ठ छथन, श्रि का का । श्रा छ शिष्ठ छथन, श्रि का का । श्रा छ शिष्ठ छथन, श्रि का का । व्या छ शिष्ठ छ छ । किर्त क्रा है का । किरा का । किरा का । किरा का । छात यि का । व्या का । छात प्रा का । छात प्रा का । छात प्रा का । छात प्रा का । छात छ। का । व्या क

পয়ার। কারাপারে বল্ন হলৈ হিনন্ত গ্রাজন। তাত তুংখ পায় সেই নারীর কারণ।। বিদাদ মানতে করে কালের হরণ। ভাতঃপর শুন যাহ। হইল ঘটন।। নার্দ্ধ আইল দৈতাপতির নিকটে। দীক্ষাগুরু দেখি দাগু।ইল করপুটে ॥ পাদ্য কর্মা দিয়া দিল বলিতে আনন। শ্রুত্ব ঘটরা বলিলেন তপোধন। কর্মাগ্রাক্ষণণে সব করি য়। বিদার। নিরুক্ত হইল নূপ গুরুর সেবায়।। বিধিবজ্ঞ খাদ্য ক্রব্য আনিয়া তখন। মনসাধে গুরুদেবে করিল অর্পণ।। আহার করিয়া য়নি শয়ন করিল। দৈতা পতি গুরুপদ গেবিতে লাগিল।। ক্রেক বিলয়ে মুরি শিল্ত হইল। পরে নূপবর স্লান ভোজন করিল। দৈতা নিত্র। হইতে উঠি মুনি রাজারে ডাকিল। আজা আজি বাজা বিভাগত তথায় আইল।। তুপতিরে দেবগাধি দেপিয়া তথ্যী সক্রণা ভাবে তারি কৃছিছে বচন।। হিন্দু

अमाशा, नीज़ हन उथा, एउमिन वानि छेम्रा। अन्छ वंडन, बाङ्गांत नम्मन, छनिया शकीत सूर्य। ज्यानम जेर् পার, হইল তাহার, ভাসিন পরম সংখ।। পাতের ন-मास्त, वाल काकारा, इन याहे की छिटा आर्मादत दक्षम, क्तिल य जन, (मर्थ) मिशा खनात्र ।। चन्नयुत ্তার, হইবে এবার, শুনেছি শুকের কাছে। বরমাল্য स्माद्ध, मित्वक मद्भारत, हेहाउ हिन्छ। कि ष्मारह ।। कतिन ্রা গ্ণন, দেখিল এখন, পক্ষিবাক্য মিখ্যা নয়। তাহার িৰিবাছ, হউবে নিৰ্ম্বাহ, আমার সঙ্গে নিশ্চর॥ পাতের ্নন্দ্ন, কহিছে তথ্ন, শুনহ আমার কথা। অবশ্য সে-शास्त्र, यात कुरे करन, रेर्थ नाहिक जनाया। एक नाती नास, (महे (मान शिर्म, हन इहिव এथन, यछ नगांहांत्र, িপাইব তাহার, শুকেরে করি প্রেরণ।। ছুজনে তখন, कितिह शमन, भाती शक नात नाता। एएथ कछ एमन, नाहि ह्य (माध, हत्न अछ मानात्रकः।। नए नही कठ, এডায় পর্বত, তার সংখ্যা কেবা করে। যে পথ না क्षारन, एक भारी छारन, किछाना करत नुष्रत ॥ धम्छ कित्रिया, भारति पिटम शिया, त्यहे प्रतम अर्दिमान । मश्र ্মাধ্যেতে,সন্ধান করিতে,উত্তম আওরাস পাইল।। রন্ধন े ভোজन, कतिया जथन, त्रशिलन महे शाला । अधिनन কেৰে, প্ৰকাশ হইৰে, তাহা ভাবিতেছে মনে।। তাহার। ছুজন, করিরা ভ্রমণ, দেখায়ে নগর শোভা। মনোইরা-্লয়, স্থানেং রয়,কার সাধ্য বর্ণে কেবা ॥ ক্লাকেরে তথন े बंदान तक्षम, कृत वह उपकात । कामिनीत साम कत्रह পায়ান, বার্ড। ভূষি আন তার।। মম মনোব্যথা, ক্লিট हरत ज्या, कि कर्म हरत भाखना। चकुन गामिक ् छात्रि हुः थनीत्त्र, (क्यरन वाँ ि वलना ।। मिलहा मानाप

अकि र्रा मांग्र, क्षकाम क्रिएंड मात्री। युद्ध (म्था हिया, भंत्र निक्किशिया, ज्यमर्भन इत्ला नाती॥ त्क्मन अकारत, वत्रमाना सारत, अमान कदिरव थनी। शाकित কোথার, জিজ্ঞাসিয়ে তায়, এই কথা আইস লানি॥ এতেক বলিয়া, পিঞ্জর খুলিয়া, শুকেরে ছাড়িয়া দিল। ক্রতগতি যায়, কালিনী যথায়, সেই স্থানে উত্তরিল।। चानिया छेशत, रेबरम शक्तिवत, एचिट्ड रम तम्पीरत। कार्यात माधन, कतिव १थन, दिकारन छ। हिला करता। पमन मगर, पारिन उथार, (एमा एका है एक सनी। एक ट्नकाल, जात প्रक्रि वल, विमय भूर्वक वानी।। রদিক রঞ্জন, ভাবে দর্ককণ, অপনে দেখি তোনায়। এসেছে এখানে, তোমার কারণে, কর তারে পারিণয় । স্থপনে তাহারে, অঙ্গীকার করে, আলিয়াছ নিলালয়। कहि निक नाम, धहे थारन धाम, दिल छात्त शतिहत् ॥ बाजांत नन्तरन, তোখাदে क्रभरनः, प्रिया भागन श्राप्त । অনেক বুঝারে, আখান করিরে, আনি তাহারে হেথায় कामिनी उथन, शक्तीत वहत. अनिया जाक्त्री श्ला। इन्तत्र शिक्तिण, व्यक्ति शतिशाणि, क्वान सम शांशित ॥ কামিনী তাহারে, কহিছে দত্তরে, শুন শুন পঞ্চিবর 🎼 कर विवत्तन, कारात भगन, शांक एमि नित्रस्त ॥ काभिनीत वानी शको उरव खान, करह जारत शूनसांत। ভূত্তিপাল নাম, বড় গুণ্যাম, রঞ্জন তাঁর কুমার।। व्यामात्त शाहेया, मत्स्रायं इहेया, वाश्यितारक यञ्च कृति। ছুমুস্ত নগর, থাকি নিরন্তর, শুন গে। রাজকুমারি। তো माद्र चल्टन, दिखा त कटन, स्ट्राट्ड र्डडान। या গ্রীয়া হেথায়, পাঠাইল আসার, ভ্রিতে ভোষার স্থান लेकि इट्ये वाकी, छनिशा दम धनी, मूचिमिन् उपलिल। या

भारत अथारन, सामिरल दक्यरन, दक छात्राम विनम्न मिन बाबारत दशन, परबंद त कन, त्क्यरम हिनिया स्थारत क्र मा जनाया, कर मठा कथा, देशत अगानी करत्।। क्टर शक्तिवत्र, मात्रात छेलत, अनर विदनामिनी। कतिरक গ্ৰন, পারি অনুক্ষণ, ভূত ভবিষাৎ জানি।। গণন করিয়া এখানে আদিরা, ভোমারে চিনেছি তাই। কহ ধনী কবে अश्वम्बता हरर, जात जद नहा। यहि ।। यहि ताकवाना, দেহ তারে মালা,তাহলে সে বাঁচে প্রাণে। করিয়া মিলন कृत कालयाशन, अहर्निमि छुडे अतन।। नरहर क्यांन; दह्ति। ভোমাবে বাচিবেন लारन, इश्राम **फ**ःथनीत्त शिषाः (प्रश् कृत ও जुन्हति ॥ আছনিশি, পক্ষীর ভারতী; শুনি রসবতী, কফিছে তার কাছে। শুন धन्तरत, इत चम्रवत, मश्चार तिलम् चार्षा धननी महन, ্করিয়া প্রমন, কব স্বর্যার কথা। দিলে অনুমতি, ষাবে পাত্র পাতি, মহারাজাগণ যথা।। শুন বিছক্ষ, আমার আশ্রম, আইদ পঞ্ছ দিন পর। সমুগুর যবে, নিশ্চিত इंडेर्टर, जानिया कर मचुत्र ॥ तकनी मगत्र, त्ररस्हि निर्धाय, স্থপন দেখিয়া তারে। নিতা ভক হলে।, অক শিহরিল, ्नीन्टक्जूत श्रहाद्या। तक्षन कांत्रण, यन छेहाडेन, इत्र মোর সর্বক্ষণ। তাহার যেমন, আমার তেমন, সমভাব ष्ट अने ॥ विनयं भूर्विक, कहित्व डांशकि, बत्रमाना पिर्व ভায় ৷ এতেক ভানিয়া, সম্ভোষ হইয়া, পক্ষী সাগিক बिषायं।। मोळांनाथ वटन, खनर मकरन, विवार देशन (य मद्भा य कर्ण मिनी, शाहेन खनम्मि, छाहा वर्षि क्यार्व ।।

প্রার। ওক পশ্চী আইল যদি রঞ্জন গোচর। দে বিয়া তাহারে তবে কিছালে সম্বর।। যে নিশিক্ত পিয়া

हिरल कामिनीत नमन। जारात कि देशन दण अनित असन दिश्याह जूमि किट्ट लाहे तमगीदा। एक वार्छ। धनाहेत्र। बाहु आमाद्र ॥ तक्ष्रांत्र कथा अनि एक शकी कन्न शिप्राहिनाम व्यामि त्महे त्रमणी व्यानप्त । ত हात नरक क त्यांत इहेग्राहिं (मथा। क्या एकाहेक धनी शासि ছিল একা।। ভোমার মনের খেদ কহিলাল তারে। নিডা যশে হপন দেখিলে যে প্রকারে॥ গুনিয়া কামিনী ্চাছিলেন পরিচয়। হুঙাস্ত জানাই সব করিয়া বিনয়নী नकल नमाठांत भारेया म तमगी। स्य युका स्ता भारत करह वह वांगी।। ताथ हम आणि यह परिवर्ध সে জনে। দিবস রজনী ভাবি তাহার কারণে ৷৷ তাহাই যেমন মন আমার তেখন। সঁপিরাছি গে জ্লারে জীবন **घोरन ॥ मुख्य किरान भारत खन्नमुता हर । यह गाला जाएक** व्याचि श्रदान कृतिय।। कननीत निकटिए कृतिया श्रमन चय्रमुद्रा इव विल कहित अधन।। প्रध्य पियन शरत या-ইতে কহিল। নির্মার্থ্য করিয়া মোরে কহিত্র প্রকল।। **७क बूट्य ७** ज्वार्ड। भारेबा बक्षन। ज्यानम नागद मग्र হইল তথন।। হোথার কামিনী ধনী কত মত ভাবে। ক্লঞ্জনের সঙ্গে বিভা কি ৰূপেতে হবে।। এতেক চিভিয়া यात्र जननी नपन। भारेम् दिन पिन दिनिए भारत। किक्त निन तानी जादत कुमन वातजा। जान चाहि वनि अभी लोग्नाहेना मांशा।। स्थम ला समनी अक कृति निद्व শ্লেদা যে নিমিত্তে আসিয়াছি তোমার সদন।। গৌবন সন্ময় স্থোর স্থাসিয়া উদয়। কহিয়া পিতারে মোর দেহ পরিণয়।। স্ময়র। হব আদি করেছি মন্ত্র বুরিয়া क्रम्भ कार्या याहा जर मन।। कनाम कात्रकी स्थित हो-ক্ষাৰ ক্ৰিছা। আখাস ক্ষিয়া ভাৱে ক্ষে এই কথা।। क्रांकान निकटी करि जिर सन्दर्भ । एत समा द्वन ५७

बिल्ड अल्डा । मध्ये मिर्ग मध्या विल्ड उर प्रिनि নিত্ৰ দিয়া যত রাজাগণে আনাইব**া। তাহাদের মধ্যে ¹** विकारत लग्न सम् । वत्रभाना निम्ना छाटत कति ह वर्तन ॥ 🛎 ননীর মুখে শুনি এতেক বচন। আপন আলয়ে তথে ক্রিল প্রথম। রাজার নিকটে রাণী গিয়া ততক্ষণ। भिनि श्रिक्षक छादा कदा निर्देशन।। अनर महा ক্লিজা বলিহে তোমায়। কামিনী আসিয়া অদ্য আমার জ্ঞানয়। স্বয়য়র দিতে তার কহিল আপান। কেমনে নিশিচন্ত হয়ে আছ নুপমণি।। এ সকল বাৰ্তা তবে পা-📚 ब्रानुभवत्। चीहित एए अयोदन वात पिटनन जवत।। ্লাত নিত্ৰ গণ প্ৰতি কহেন তথন। নম কন্যা স্বয়ম্বরা 🚉 ইবে এখন।। লিখিয়া পত্রের পাতি কর নিমন্ত্রণ। ব্রাকাগণে আন সব আমার তবন। রাজআহ্য পার্ ইয়া তবে কর্মচারিগণ। দেশেবপত্রিকা যে করিল প্রেরণ मधी शृत्थ वार्ड। मव ब्रांककना भाष्ट्रम । विवादश्व मिन श्चित (यह पिन इड्रेन ॥ शक्षम पितम ११ठ इड्रेन यथन। कारत मदन सक्राकी काहरन कचन।। कारनर श्रथ भारत कारत निदीक्षण। एकारत प्रियोश जोत मुख रत मन।। अभारत तक्षन कार्ष्ट दिश्यम करा। यक निवन जानि इंडेल छेएत।। काभिनीत दाक्का जानि नश्वाप कानिया। कान मिन म नाजीत इहेरबक विद्या । तक्करनत कार्य পক্ষী মাগিরা মেলানি। চলিলেক জ্বতগতি যথায় কাৰী शिनी।। कार्यक दिलशु शरतं उथा अरविन्ता। कार्यिनी कि चित्रा भक्ती अकृत इहैन।। रिहरूम करह उद का ीं भनीत **कारन। कत्रमंत्र स्वामात क्**रेरव स्वाम स्टिन दिकाशीम ब्रह्दिम ब्रञ्जन गरामात्र । धार्या कृति भिर् कथा जगर भागाया। अनिया भक्षीय कथा करिए मुखबी विवाहक विषय चाहाय पिन हाति । यज्ञयतं निर्वाय

গিয়াছে দেশেই। আনিছ ভাহারে তুফি পঞ্ম দিন বলে বাটার সমূখে এক আত্তরক আছে। দাজাইতে ভাহারে কহিবে তার কাছে।। আনি গিরা মালা দিব ভাহার গলায়। এই বাকা ছির করিয়াছি যে নিশ্চর। যাওং পগবর তারে গিরা বল। তিনি নম পতি হলে জী বন সকল।। কদপে আইলে যদি আমার কারণ। না করিব ভারে বিভা এই মোর পণ।। কামিনীর কাছে পক্ষী বিদায় হইয়া। যেখানে রঞ্জন তথা দেখাদিল গিয়া।। কামিনী বলিল যাহ। বলিতে রঞ্জনে। সকল রভাত্ত ভক্ক কহে ততক্ষণে।। ভনিয়া পক্ষীর হাক/ আ

ত্রিপদী। হোথার ভূপতিগণ, পারে মবে নিমন্ত্রণ, कर्नां वे ब्लाम्बर अखितन। इड्डन अंदक्षे म जा,लाहात कि ৰুব শোভা, নৃপ সৰ যথায় ৰসিল।। সভ্য ভবা যত জন, करत भिक्षे व्यानाभनः भना नृष्ठा कत्रदत्त मणिनी । इरेत्रा अपूल कांग्रः शांग्ररकर्ण शीज शांग्र, अंतरभरं स्मधूतः ধানি।। ভৃত্যগণ আছে যত, স্থানেং নিয়োজিত, আঞা বর্ত্তি হয়ে দাণ্ডাইয়া। যে জন বলেন যাহা, তথনি ক্রয়ে ভাহা; রাখে মান স্বাহের ভূষিরা।। হেখা জন্ত্রীপাল সূত্র ्रहेशा व्यानम्य यूज, कहित्ह भारत ते क्यारत ॥ इन मधी **७८ भतः, कामिनोत च्यायतः, इहारक क्रमकान भटके** अञ्चलकात देवल धनी, एक विन बार्ड। व्यानिः, बद्रमान्। দিবেক আমারে।। আমারে দে কহিয়াছে; আন রুক্তের बीटहः मोखारेक्षा विहटक उथात्र ॥ भाज भूज बटन मयाः ज्या जूनि योर जना, जायाटि कि जाइ ब्राह्म में मिति ना कि निर्देश भारत, वत्र माना प्रियंत कार्यः, भारत कर्षाः अप्तारम् दत्र ।। एरकरत् विकामा कति, त्रांकमू उ ब्राइनि अक। अन मामाना त्वरणट्छ। नित्रमिछ ছाटन

ब्रियाः क्रहित्समे पक्षारेकाः दक्षमाना भवति ज्वामाटक।। देशीयात्र वाक्केत्रावी, बत्तार्व तन कति, भूला व्यक् हार्देश कारछ। भारत व्हान क्या रहन, वर्ग विकाधिती स्वनः উপুনীত হইল সভাতে। যতেক ভূপতিগণ, করি তারে হর क्षेत्र, माहि भारत जाथिभान हिल्डा बक्यु स्के हाहि दश्रम হি বদনকিবার মঙ্কে দবে তাহার ৰপেতে।।ৰপের দেখি জ্বাধুৰ্য্য, সকলে হল অধৈৰ্য্য, বলে হেমৰূপ ৰাহি দেখি। মির্জ্জনেতে পিতামহ,গটিল ইহার দেহ, মন মধ্যে হরে क्षिति सूथी।। यरज्ञ नृशिव वरण, माणा पर सम शरण, इत्तर त्राव कि विश्व कि विश्व विश्व विश्व कि विश्व कि विश्व विश्व कि विष्व कि विश्व हिर्ह कन्तात्र कारह कारत। मूच ना ठारिन धनी ॥ चांख इक्क कार्ड निग्ना, क्षिट्टिड नित्रक्तिता, यहे द्राटन मा-প্রাইরা রঞ্জন। তথম সে রাজবালা, গলে তার দিয়া। ংখালা, প্রথমিয়া করিল গমন।। ব্যাভার দেখিরা ভার, ल्लांका जन हमध्कांत्र, धनर शानिएक नाशिन। करत्र की-्लाइन क्वनि, बटन मुक्तभा त्रम्भी, मीटन्त भनाम माना ্দিল।। সেই বৰ পরিছুরি, রাজস্থতার নিন্দা করি, যে बाहात हिन उन्न। यहाताल। इनकाल, कनादि किंद्रा घरन. भीड करन कतिरम दत्र ।। भरद शन मि-का कति, मछक चुनिएछ नादि, वर्ष मण्डा रहेन चार्याद क्याहिया वर्ष दरमा, त्रष्ठ रहेदन नीड अरमा व ক্ষেত্ৰ ব্যাভার । পিতার গঞ্জনা শুনি, কহিছে কামিনী क्षेत्री देकत शिष्ठा उरमह कामाय ।। এहम मानामा বাহারে করি বরণ, ভাকি ইহার লহ পরিচয়। আমি भाषात्रभारमः,तरियोद्ध स्पत्वरमः, धन हेरात्र कतित्राम्बन खक लकी शाम पक् श्रेताहि अवगर, ताम ग्लानह ंबहे बालाश्वीनश कमाति वांशी, इव युक्त मुनामनि, स्कृटनर करवास क्षमा क्षम क्षांशन मान, क्षांत्र हा

নি হও কাহার সন্দেশ। শুল রাজা পরিচয়, কেল আর তর, নীচ কুলে নহি যে উৎপত্তি। ভদ্রীপাল দুপ্রিল, আমার জনক কিনি, হয়ন্ত নগরেতে বসন্তি । কুপ্তন আমার লাম, আসিয়াছি তব থাম, ছপনেতে কেথিয়া কন্যারে। মনেতে হরে বিরাগী, এগেহি পা-বার লাগি, শুক পকী বাক্য অনুসারে।। শুকেরে করি লগ তব ছহিতা সদন,সব তহু পাইলাম তার। জীবন কিন থন, করিয়াছে সমর্পান, তাই ভার্যা হইল আন বিরা। তব কন্যা নিজা ঘোরে, স্বপনে দেখিয়া মোরেই সাধাহিল বর্মান্য দিতে। বিশেষ করি তদন্ত, শুক কহে আদা জন্ত, আমারে যে এখানে আসিতে।। রঞ্জনের তাকা শুনি, রজা স্বিক্ষা গণি, সব ছঃখ হইল সম্বর্ণ। গীতানাথ দন্ত ভণে, শুনহ রসিক জনে হিতহান ফা-

एक विश्वित्रक मान वाज्यित। मधुत बहन बनि जासा कृषिणा। शहत तामा कतिरणक मिन एडकन। म क्ष यक कर्य देकन नमानन ॥ श्राह्म नश्च अन्तरा अन्तराहत वि र रहेगा। त्रिथिया यटक लाक आनत्त्व जानिक क्तिमिनीतकारन (मार्ट इहेल मिलन। भारत भरताम देन इसन्दि सन।। किंद्र मिन उथाकारत कविशा वश्र अध्यत्रत काट्ड त्रिया कहिट्ड तक्षम ।। वह दिन वर्ष द्वा श्वानिप्ताहि जामि। जलूबंर श्रृतिक विशास एक লাহি জানি পিতা যাতা আছরে কেমন। ভাষার विना सम सन केठावेन।। नम्राठ रहेन। তবে ताझ। शिहिन। कामांजा कन्गाद्व फिल नाना विश्व धन ॥ भाद्य त्र नन्तरम तह एव उठि कति। विसास मिटलम जामः। করে ধরি।।প্রণমিয়া তিন জনে রাজার চরণে। তুমুস্ত - श्रद्ध चाइल चानचिक मत्न।। तक्षम चानिया उदर च समात थाय। अनक अननी शाम कतिन खगाय।। ता कातानी भूजवधु मिथिहा इहे जन। सत्तिक मस्डिव वर्ष क्हैन जथन॥ त्रक्षन शिजात कारक गव निर्द्शनत। सके करण विवादहत चहेना इहेल ।। महनर श्रमारमी व्य कृतिया ब्राम्मत्। मतिल जामनगरन मिन बीचा थन । किथिन हि अने बोका दोक्ष कविया। प्रतिनेदम रभन दक्षरमदा अका किया।। धर पृष्ठक नमाश्च इंडेन वर्धना कृति व कार कारह किए कति निरंपत्रस्था स्वाम कालि धर्म मन क्रम बहुन । मीठामाथ पर हेड्डा कविन बहुन । , नम् थि।